मयंक काग़ज़लें

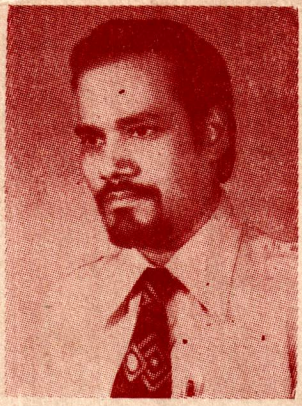

के० के० सिंह मयंक अकबराबादी

लीजिए आपके हाथों में मेरा नया गज़ल संग्रह हाज़िर है। ग़ज़ल मेरी सबसे अज़ीज़ सिनफ़ है। मैंने वैसे कुछ गीत और नज़में भी कही हैं, मगर ग़ज़ल फिर ग़ज़ल है। यूं भी ग़ज़ल को ग़ालिब और ज़िगर ने बहुत संवारा है लेकिन दौरे हाज़िर में ग़ज़ल के मानी हालात की अक्कासी करते हैं और हुस्नों इश्क से दूर हटके इंसान जिन हालात से दो चार होता है, उन हालात का अक्स भी आज की ग़ज़ल में मौजूद है। मिसाल के तौर पर दुष्यंत कुमार जी का एक शेर

"एक चिंगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तो
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है"

अपने आप में एक नया रंग पेश करता है। मैंने इन्हीं से प्रेरणा ली है और ये आपको इस मजमूअ-ए-कलाम में मिलेगा।

ग़ज़ल मेरा पेशा नहीं है, बल्कि एक शौक है। वैसे मैं रेलवे में एक आफीसर के ओहदे पर फाइज़ हूं और जब कभी वक्त मिलता है लिख लेता हूं, मेरे उस्ताद सूफी हज़रत नक्श और श्री फैज रतलामी है। मेरे शौक को आवाम तक पहुंचानें के लिए मैं डायमंड पाकेट बुक्स, परिवार का मशकूर हूं।

उम्मीद है मेरा ये मजमूअ ए-कलाम (ग़ज़ल संग्रह) "मयंक की ग़ज़लें" आपको पसंद आयेगा। मैं आपके ज़रीन मशवरों का तालिब रहूंगा।

के० के० सिंह मयंक अकबराबादी
एच० आई-जी-५-न्यू शाहगंज
आगरा

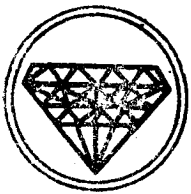

हसीन चांद नहीं खुशनुमा गुलाब नहीं
तू लाजवाब है तेरा कोई जवाब नहीं
जो एक बार पिये तो नशा नहीं उतरे
निगाहे यार के जैसी कोई शराब नहीं
तुम्हारा जिस्म है ऐसा कि जैसे ताजमहल
तुम्हारे जैसा जहां में कोई शबाब नहीं
शबाब, हुस्न, अदा, ज़ुल्म, सुरमई आंखें
हैं इतनी खूबियां जिनका कोई हिसाब नहीं
तुम अपना जर्फ़-ए नज़र आज आज़माओ ज़रा
'मयंक' आज रुख़-ए-यार पर नकाब नहीं

—इसी संग्रह से

डायमण्ड पाकेट बुक्स में
शेरो शायरी की अनुपम पुस्तकें

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ गजलें
हिन्दी रुबाइयाँ और मुक्तक
उर्दू की बेहतरीन नज्में
उर्दू की बेहतरीन गजलें
उर्दू के बेहतरीन शेर
उर्दू की बेहतरीन रुबाइयाँ
गालिब की शायरी
शकील की शायरी
दाग की शायरी
जफर की शायरी
चुनी हुई रुबाईयाँ

मयंक की गजलें

कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' अकबराबादी

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
डायमण्ड पाकेट बुक्स
2715, दरिया गंज, (मोती महल के पीछे)
नई दिल्ली-110002
वितरक :
पंजाबी पुस्तक भंडार
हरीवा कलां, दिल्ली-110006
मूल्य : चार रुपये
मुद्रक : बन्धु प्रिंटिंग सर्विस कं०, दिल्ली-32

MAYANK KI GAZLEN Urdu Poetry Rs. 4.00

ग़म ज़रूरी सही ज़िंदगी के लिये
ग़म की दौलत नहीं हर किसी के लिये
अपनी आंखों में सूरज छुपाए हुये
हम भटकते रहे रौशनी के लिये
ज़िंदगी वो जो ग़ैरों के काम आ सके
ज़िंदगी तो है बस ज़िंदगी के लिये
बढ़ के ढादे ये तारीकियों के सुतूँ
दिल जला राह में रौशनी के लिये
ए 'मयंक' अब तेरे सजदे होंगे कबूल
सर झुका यार की बंदगी के लिये

□

मंज़र तमाम ज़ेहन से रूपोश हो गये
लम्हे वो ज़िंदगी के कहां जाके खो गये
उन पर तो ये गुमान भी मुझ को न था कभी
वो भी दुखा के दिल मेरी आंखें भिगो गये
सदियों से मुन्तज़िर था न आए वो आज तक
अरमान जाग जाग के सब दिल में खो गये
दीवाना हम को तेरा जहां कह रहा है आज
ले हम भी तेरे नाम से बदनाम हो गये
अब ए 'मयंक' कुछ भी हो अंजाम-ए-ज़िंदगी
हम तो किसी के इश्क़ में दीवाना हो गये
दामन से धुल गये सभी शिकवों-गिलों के दाग़
तुरबत पे मेरी आके जो तुम आज रो गये

नक़ाबे रुख उठाकर जब कोई पहलू बदलता है
तो यूँ लगता है जैसे सुबहे दम सूरज निकलता है

शहर के लोग ये चेहरे पे चेहरे क्यूँ लगाते हैं
कहीं चेहरे बदलने से किसी का दिल बदलता है

किसी की मुस्कुराहट मेरे जी का सहारा है
मगर ज़िक्रे तबस्सुम से ही अब ये दिल दहलता है

तुम्हारी जुस्तजू में आंख भी पथरा गई मेरी
मगर देखो आंसू बन के ये पत्थर पिघलता है

'मयंक' अब तुम बदलते वक्त में खुद को बदल डालो
बहारों में हर इक सूखा शजर कपड़े बदलता है

□

खुद ही में दर बदर नज़र आया
लौट कर मैं जो अपने घर आया

उनकी आंखें जो देख कर आया
फिर न सागर उसे नज़र आया

उनकी आंखों में अश्क क्या आया
इक जहां चश्म तर नज़र आया

उनकी आंखों में लाल डोरे हैं
मेरा खून-ए-जिगर नज़र आया

झांक कर ज़िंदगी को जब देखा
एक सूखा शजर नज़र आया

घर से निकला शब-ए-अलम जो 'मयंक'
गमज़दा हर बशर नज़र आया

रात भर जो दर्द की लय पर ग़ज़ल गाता रहा
उसको शायद ग़म तेरी फुर्क़त का तड़पाता रहा

एक लम्हा भी सुकूं पाया न तेरे हिज्र में
मैं दिल-ए-नादान को हर बार समझाता रहा

वादा करके तू न आया इसका कोई ग़म नहीं
तेरा वादा याद मुझको बार-बार आता रहा

जब मेरे अरमां भरे दिल पर गिरी थीं बिजलियां
गुलशन-ए-हस्ती का भी हर फूल मुरझाता रहा

छोड़कर साज़-ए-मोहब्बत बज़्म-ए-हस्ती में 'मयंक'
प्यार के नग़मे हमेशा दिल मेरा गाता रहा

हो गई हैं दूर सब रानाइयां सुन लीजिये
ज़िंदगी में बस गईं तनहाइयां सुन लीजिये

डूबा-डूबा सा मेरा दिल आज-कल रहने लगा
और गहरी हो गईं गहराइयां सुन लीजिये

कूच-ए-जानां से उठकर हम न जायेंगे कहीं।
ग़म नहीं है हों अगर रुसवाइयां सुन लीजिये ॥

एक लम्हे के लिये आकर तसव्वुर में मेरे
बज रहीं हैं दिल में जो शहनाइयां सुन लीजिये

अब तरसता है सुकून-ए-दिल के ख़ातिर ए 'मयंक'
दुश्मन-ए-जां बन गई पुरवाइयां सुन लीजिये

दिल ने ये कहा उनसे कोई काम नहीं है
लेकिन इसे फिर भी कहीं आराम नहीं है

बरबादि-ए-तसकीन का उनसे नहीं शिकवा
और अपने मुक़द्दर पे भी इल्ज़ाम नहीं है

ये शाम भी क्या शाम है तुम साथ हो मेरे
इस शाम से रंगीन कोई शमा नहीं है

तुम पास बिठाते हुये शरमाते हो जिसको
दुनिया में 'मयंक' इतना तो बदनाम नहीं है

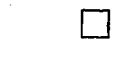

है इश्क क्या ये समझ जाओगे कभी न कभी
हमारे पास जो तुम आओगे कभी न कभी

सियाह रात में मिल जाएगा हमें रास्ता
जो चांद बनके नज़र आओगे कभी न कभी

कभी तो होगा ज़माने पे राज़-ए- इश्क़ अयां
क़सम ख़ुदा की है शरमाओगे कभी न कभी

इसी तरह जो तसव्वुर से रोज़ आते रहे
मेरे ख़यालों पे छा जाओगे कभी न कभी

निगाह-ए-दोस्त की ज़द में रहोगे तुम जो 'मयंक'
चमकता आईना बन जाओगे कभी न कभी

वो तसव्वुर में आ गये होते
मेरी हस्ती पे छा गये होते

रश्क अपने नसीब पर करते
हम अगर उनको भा गये होते

गरमि-ए इश्क और बढ़ जाती
उनका पहलू जो पा गये होते

अपने दोनों जहां संवर जाते
उनका ग़म हम जो पा गये होते

हम जहां से 'मयंक' टकराते
वो जो वादा निभा गये होते

मिलो न तुम तो मेरा दिल उदास रहता है
यही ख़याल मेरे आस पास रहता है

भरी हैं जीस्त में जो तलख़ियां ज़माने की
उन्हीं के दर्द से दिल महवे यास रहता है

उसे जहां की है परवा न-ख़ौफ-ए रुसवाई
मरीज़-ए-इश्क़ सदा बद-हवास रहता है

किसे बताएं कि हम कितना प्यार करते हैं
'मयंक' रूह में उनका निवास रहता है

ये ख़ाली-ख़ाली से शीशे ये टूटे पैमाने
यहां तो जैसे कोई देवदास रहता है

कोई यूं-बे-नक़ाब आया है
जैसे इक माहताब आया है

जिनको आना था वो नहीं आए
उनके आने का ख्वाब आया है

उनसे मिलने की है लगन दिल में
आज जिन पर शबाब आया है

मेरे इज़हार-ए-इश्क़ पर यारो
आज उनको हिजाब आया है

ए 'मयंक' उनकी हां में और न में
प्यार हमें बे हिसाब आया है

परबतों के पेड़ों पर शाम घिर के आई है
मेरे साथ मौसम की आंख डुबडुबाई है

क्या हसीं नज़ारा है और समां भी प्यारा है
ऐसे में तू आ भी जा याद तेरी आई है

कैसे बात बन जाए कैसे काम हो जाए
मैं जो बे वफ़ा हूं तो, वो भी हरजाई है

जिसको इक नज़र देखूं वो ही मेरा हो जाए
ख़ुश नसीब हूं मैंने क़िस्मत ऐसी पाई है

इक अदा 'मयंक' उनकी होश खोए देती है
और जान लेवा वो उनकी अंगड़ाई है

वो मेरा दिल है जो पहलू में रह नहीं सकता
मिलेगा तुमको कहां ये भी कह नहीं सकता

वो मेरी बांहों में आएं न आएं उनकी खुशी
रहें वो ग़ैर की बांहों में सह नहीं सकता

बहुत गुज़ार दी तेरे बग़ैर जाने जहां
तू आ भी जा के मैं अब दूर रह नहीं सकता

वो मेरे बन के किसी के भी हो नहीं सकते
वो मेरे होके रहें ग़ैर सह नहीं सकता

'मयंक' जितना भी रोना था रो लिये हैं हम
अब एक अश्क भी आंखों से बह नहीं सकता

□

मोहब्बत में मिला जो ग़म हमें वो जां से प्यारा है।
जिन्हें ख़ुशियां नहीं मिलतीं उन्हें ग़म का सहारा है

अजब दस्तूर-ए-दुनिया है समझ में कुछ नहीं आता
ग़मों ने जिनको छोड़ा है उन्हें ख़ुशियों ने मारा है

बड़ी लज़्ज़त है इस दर्द-ए-मोहब्बत में जहां वालो
तड़पना प्यार में हो तो हमें वो भी गवारा है

अजब दीवानगी है प्यार की राहों में ए यारो
जिधर नज़रें उठाई हैं उधर उनका नज़ारा है

जिन आंखों ने पिलादी है मोहब्बत की शराब हमको
'मयंक' अब ज़िंदगानी में उन आंखों का सहारा है

जल उठ कितने दाग़-ए-जिगर देखिये

वो जो परदा उठाकर गिरा दें ज़रा
शाम को भी शरीक-ए-सहर देखिये

अब चलाते नहीं हैं वो तीर-ए-नज़र
इश्क़ का हो रहा है असर देखिये

संग दिल भी न दिल को बचा पाए हैं
देखिये उनकी तिरछी नज़र देखिये

वो 'मयंक' आज मेरे ख़यालों में है
बढ़ रहा है ये दर्द-ए-जिगर देखिये

नज़र की राह से दिल में समाए जाते हैं
मेरे वजूद की दुनियां पे छाए जाते हैं

मैं इसका एहल नहीं हूं करो न शर्मिंदा
फिजूल आप मेरे नाज़ उठाए जाते हैं

खुदा का बन्दा-ए-नाचीज़ हूं खुदा तो नहीं
मेरे हुजूर में क्यों सर झुकाए जाते हैं

जब इश्क कर ही लिया है तो फिर अलम कैसा
इसी यक़ीन पे सदमें उठाए जाते हैं

ये बज़्म-ए-इश्क़-ओ-मोहब्बत है ऐ 'मयंक' यहां
हर इक को आंखों से साग़र पिलाए जाते हैं

पास आकर दूर क्यों अब जा रहे हैं ऐ हुज़ूर
बे सबब दिल क्यूं मेरा तड़पा रहे हैं ऐ हुज़ूर

हम तुम्हारे इश्क़ में हस्ती मिटा देंगे जनाब
आज़माइश में हमें क्यूं ला रहे हैं ऐ हुज़ूर

बात कोई तो है जिसकी फ़िक्र दामनगीर है
सामने आने से क्यूं घबरा रहे हैं ऐ हुज़ूर

ये मोहब्बत का असर है या अदा-ए-हुस्न है
जाम क्यूं आंखों के यूं छलका रहे हैं ऐ हुज़ूर

आपकी क़ुरबत से है जिंदा ज़माने में 'मयंक'
दूर मेरी बज़्म से क्यूं जा रहे हैं ऐ हुज़ूर

□

मानता हूं ज़ाहिर में मुझ से दूर रहते हो
हां मगर ख़यालों में तुम हुज़ूर रहते हो

ज़िंदगी की राहों में जब अंधेरा बढ़ता है
आप मेरी राहों में बन के नूर रहते हो

आपका तसव्वुर जब ज़हन-ओ-दिल पे छाता है
देखता हूं पहलू में तुम ज़रूर रहते हो

इक नशा सा रहता है रात दिन मुझे हम दम
बन के मेरी आंखों में तुम सुरूर रहते हो

आरज़ू 'मयंक' की है पास पास रहने की
तुम मगर न जाने क्यूं दूर दूर रहते हो

हम भी खुश हाल थे जब उनसे मुलाक़ात न थी
दिन भी आसान थे दुश्वार कोई बात न थी

रोना सिखलाया तेरी यादों ने आंखों को मेरी
इससे पहले मेरी दुनिया में ये बरसात न थी

जब तेरा ज़िक्र चला उड़ गईं नींदें मेरी
वर्ना अफ़साने-ए-हस्ती में कोई बात न थी

मेरी चाहत का बदल तूने तग़ाफ़ुल से दिया
तेरे अंदाज़ में कुछ प्यार की सौग़ात न थी

मैंने हर गाम पे हिम्मत से लिया काम 'मयंक'
कब मेरी राह में ये गर्दिश-ए-हालात न थी

□

वो नज़रें मिला कर क्यूं हमसे तलवार की बातें करते हैं
मरने से नहीं वो डरते हैं जो प्यार की बातें करते हैं

वो तेज़ निगाहों के खंजर इस दिल पे चलाते हैं हरदम
और प्यार के बदले हर इक से तकरार की बातें करते हैं

हम मानें तो कैसे मानें इसे ऐसा तो कभी होता ही नहीं
पांवों में नहीं घुंगरू कोई झंकार की बातें करते हैं

मैं कैसे उन्हें समझाऊं भला वो मजबूरी तो समझें ज़रा
परदे भी हैं दीवारें भी हैं दीदार की बातें करते हैं

क्या होगा ये कुछ कह सकते नहीं
रफ़्तार-ए-ज़माना देखो 'मयंक'
घुटनों के बल चलने वाले
रफ़्तार की बातें करते हैं

वो जफ़ाओं से वफ़ाओं का सिला देने लगे
क्या उन्हें देना था हमको और क्या देने लगे

ज़ख़्म अंगारों की सूरत भर दिये दिल में मेरे
और उस पर ये सितम है कि हवा देने लगे

जान लेने पर तुले रहते हैं जो आठों पहर
आज वो भी जिंदगानी की दुआ देने लगे

सादगी का नाम दूं इसको कि मैं साज़िश कहूं
घर बुलाकर वो मुझे अपना पता देने लगे

उनकी आंखों में भी अश्कों की झलक थी ए 'मयंक'
जुर्म-ए-उलफ़त की मुझे जब वो सज़ा देने लगे

□

ज़माना ये समझता है के हमको ग़म ने मारा है
मगर हम जानते हैं ग़म ही जीने का सहारा है

मुक़द्दर से हज़ारों ग़म मेरे हिस्से में आए हैं
निगाहों के इशारों ने मुक़द्दर को संवारा है

हसीं चेहरे पे खिलते फूल का धोका नज़र को है
तो गेसू की सियाही में घटाओं का नजारा है

वो आए सुर्ख़ जोड़ा पहन के मेरे तसव्वुर में
के अब ख़ून-ए-तमन्ना होगा ये दिलकश इशारा है

मेरी वीरान रातों को भी कुछ ताबिंदगी दे दो
चले आओ चले आओ तुम्हें दिल ने पुकारा है

भटकता फिर रहा है ये 'मयंक' आवारा बादल सा
के इस पर कुछ तरस खाओ के ये आशिक तुम्हारा है

तुमने आंखों के साग़र पिलाए
और हमारे क़दम लड़खड़ाए
एक दिन उनसे आंखें मिली थीं
उम्र भर हमने आंसू बहाए
अपनी आंखों से इतनी पिला दे
ज़िंदगी में न फिर होश आए
दुश्मनों ने तो इल्ज़ाम बख्शे
दोस्तों ने फ़साने बनाए
नाम सुनते ही मेरा किसी ने
बद दुआ के लिए हाथ उठाए
कह रही है चकोरी चहक कर
दिल 'मयंक' से न कोई लगाए

□

हमें निगाहे करम से न दूर तुम करना
न अपने हुस्न पे इतना ग़ुरूर तुम करना
तुम्हारे इश्क़ में हम अपनी जान दे देंगे
के इम्तहान हमारा ज़रूर तुम करना
तुम्हारी आंखों में मैंने सुरूर देखा है
मेरी निगाह में पैदा सुरूर तुम करना
तुम्हारे चाहने वालों में हम भी शामिल हैं
न दिल से चाहने वाले को दूर तुम करना
तुम्हारे दर से हज़ारों ने फ़ैज़ पाया है
'मयंक' पर भी इनायत ज़रूर तुम करना

हमारे हाल पे करके सितम वो भूल जाते हैं
ज़ुबां से कुछ नहीं कहते हैं हम वो भूल जाते हैं

गुरूर-ए-हुस्न की ये भी अदा-ए-ख़ास है देखो
के अब हर एक पे कर के करम वो भूल जाते हैं

सुना है कि मोहब्बत से उन्हें नफ़रत है अब यारो
मोहब्बत था कभी उनका धरम वो भूल जाते हैं

वफ़ा करते नहीं और बे वफ़ा कहते हैं वो हमको
रखा हमने सदा उनका भरम वो भूल जाते हैं

मोहब्बत करने वालों का 'मयंक' मज़हब वही देखा
कहां का दैर और कैसा हरम वो भूल जाते हैं

□

हसीन चांद नहीं खुशनुमा गुलाब नहीं
तू लाजवाब है तेरा कोई जवाब नहीं

जो एक बार पिये तो नशा नहीं उतरे
निगाहे यार के जैसी कोई शराब नहीं

तुम्हारा जिस्म है ऐसा कि जैसे ताजमहल
तुम्हारे जैसा जहां में कोई शबाब नहीं

शबाब, हुस्न, अदा, ज़ुल्म, सुरमई आंखें
हैं इतनी खूबियां जिनका कोई हिसाब नहीं

तुम अपना जर्फ़-ए नज़र आज आज़माओ ज़रा
'मयंक' आज रुख़-ए-यार पर नकाब नहीं

फूल बाग़ों में न खिल पाए तो वीरां होगा
उजड़ा-उजड़ा-सा मोहब्बत का गुलिस्तां होगा

झांक कर आप मेरे दिल में ज़रा देखें तो
आप का दर्द लिये दिल का हर अरमां होगा

आप गर मुझ पे ज़रा चश्म-ए-करम फ़रमादें
हर नफ़स मेरा मेरे दर्द का दरमां होगा

ज़िंदगी अपनी जो वहशत में बदल डालूंगा
फिर ज़माने को समझना मुझे आसां होगा

हम बता देंगे मोहब्बत का तक़ाज़ा क्या है
चाक इक दिन ए 'मयंक' अपना गरेबां होगा

चले आओ चले आओ कि अब ये रात जाती है
कज़ा आने को है और ज़िंदगी की बात जाती है

कहीं ऐसा न हो जलते रहें हम आतिश ए-ग़म में
बदलने को है मौसम और अब बरसात जाती है

वो सूखे फूल जो अपनी मोहब्बत की निशानी थे
हवा अब छीन के मुझसे यही सौगात जाती है

नहीं होते हो तुम तो ज़िंदगी गरदिश में रहती है
चले आते हो तुम तो गरदिश-ए-हालात जाती है

जलाकर दाग़-ए-दिल राहों में बैठा है 'मयंक' कब से
चले आओ कि ये सावन की भीगी रात जाती है

नहीं हो तुम तो दिल-ए-ज़ार को क़रार नहीं
चमन में फूल खिले हैं मगर बहार नहीं
वफ़ा की राह में कलियों से जख्म खाए हैं
कि सूनी राह में अब हम को खौफ़-ए-खार नहीं
तुम्हारे इश्क़ में ये हाल हो गया है कि अब
हमारे दिल पे हमारा ही इख्तियार नहीं
अज़ल से एक ही सूरत का मैं हूं शैदाई
'मयंक' दामन-ए-दिल मेरा दाग़दार नहीं

□

जज्बा-ए-इश्क़ ये कहता है कि वो आएंगे
दिल भी रह रह के मचलता है कि वो आएंगे
वस्ल की रात का जब जब भी ख्याल आता है
वक़्त काटे नहीं कटता है कि वो आएंगे
ज़ुल्फ़ उनकी जो सर-ए-शाम बिखर जाती है
हर सितारा यही कहता है कि वो आएंगे
गुनगुनाती हुई चलती हैं हवाएं हर सू
और मौसम भी बहकता है कि वो आएंगे
गुन्चे गुन्चे से टपकती है मसरर्त ए 'मयंक'
बाग़ कुछ ऐसे महकता है कि वो आएंगे

कौन है जो रह गुज़ारों में बहकता जाय है
खुशबुओं से इसकी इक आलम महकता जाय है

ढूंढ़ना क्या खुद-ब-खुद चल जाएगा इसका पता
उसके कूचे से जो निकले है महकता जाय है

जब तुम्हारे गेसुओं की छांव मिलती है तो फिर
ज़िंदगानी का फरिश्ता भी चहकता जाय है

कुछ अजब आया है अबके मौसम-ए-गुल पे निखार
फूल भी अंगार की सूरत दहकता जाय है

तुम भी उनकी नज्र कर दो ए 'मयंक' अपनी हयात
जिसको उनका ग़म मिला है वो लहकता जाय है

चराग़-ए-हसरत ओ-अरमां बुझाए जाते हैं
रहे वफ़ा में मुझे आज़माए जाते हैं

कभी मिलें कभी मुंह फेर कर निकल जाएं
अजीब आग से वो दिल जलाए जाते हैं

हमारे प्यार का एहसास कुछ नहीं उनको
हम उनके प्यार में हस्ती मिटाए जाते हैं

मेरे ही दिल को निशाना बनाके आज 'मयंक'
नज़र के तीर वो पैहम चलाए जाते हैं

वादा करके भी वो कब आए हैं
हमने पैहम फ़रेब खाए हैं
पास आना जिन्हें नहीं मंजूर
दिल में मेरे वही समाए हैं
जिनके खिलने पे आ गया रोना
फूल ऐसे भी मुसकुराए हैं
वो सहारा भी बढ़के दे न सके
जब मेरे पांव डगमगाए हैं
हम हुये ए 'मयंक' दूर उनसे
वो हमारे क़रीब आए हैं

है किधर है किधर है किधर
आ इधर आ इधर आ इधर
मौसम-ए-गुल ने दी है ख़बर
प्यार कर प्यार कर प्यार कर
लेके आती है पैगाम-ए-ग़म
हर सहर हर सहर हर सहर
मैं भटकता रहा उम्र भर
दर बदर दर बदर दर बदर
जाने क्यूं मुझको प्यारा लगे
हर बशर हर बशर हर बशर
मेरा साया ही है अब मेरा
हम सफ़र हम सफ़र हम सफ़र
जुस्तुजू है किसी की 'मयंक'
रह गुज़र रह गुज़र रह गुज़र

हुआ महसूस यूं जैसे क़यामत सर पे आई है
उठाकर उस बुत-ए-काफ़िर ने चिलमन उठाई है

हमें सावन का वो मौसम सुहाना याद आता है
घटा ज़ुल्फ़ों की घिर कर जब तेरे शानों पे छाई है

गुमां हमको हुआ जैसे कि गुलशन में बहार आई
महक लेकर हवा जिस दम तरी ज़ुल्फ़ों की आई है

ख़ुदा का शुक्र है बे परदा आए वो तसव्वुर में
बड़ी मुद्दत में हमने प्यार की सौग़ात पाई है

'मयंक' आए हैं अब वो पुरसिशे एहवाल को मेरी
कली उम्मीद की दौर-ए-ख़िज़ां में मुस्कुराई है

तसव्वरात में जब उनसे बात होती है
शब-ए-जुदाई को तनहाई साथ होती है

जब उनकी याद मेरे दिल के साथ होती है
तो मेरे पहलू में कुल कायनात होती है

नक़ाब रुख़ से उठा दें तो दिन निकलता है
नक़ाब रुख़ पे गिरा लें तो रात होती है

उसी को तिशना लबी से गुज़रना पड़ता है
के जिसके कब्ज़े में नेहरे फ़ुरात होती है

सभी का वास्ता पड़ता है रंज-ओ-ग़म से 'मयंक'
जहां में किस को ग़मों से निजात होती है

मोहब्बत रंज-ओ-ग़म का एक ऐसा साज़ है यारो
जो देता है सदा भी और बे आवाज़ है यारो

बुझा देते हैं एहल-ए-बज़्म इसको सुबह होते ही
यक़ीनन शम्मा के सीने में कोई राज़ है यारो

अदा-ए-हुस्न पे जो अपनी हस्ती को मिटाता है
ज़माने में वही तो आशिक-ए-जांबाज़ है यारो

बहारों में क़फ़स को ले उड़े जो जानिब-ए-गुलशन
परिंदा बस वही तो साहिब-ए-परवाज़ है यारो

हमारे साथ थोड़ी दूर ही उड़कर ज़रा देखें
जिसे भी ताक़त-ए-परवाज़ पर कुछ नाज़ है यारो

वो पहलू में मेरे आ जाएंगे पैग़ाम आया है
किसी से अब नहीं शरमाएंगे पैग़ाम आया है

बहुत तरसा लिया तड़पा लिया आग़ाज-ए-उलफ़त में
मगर अब वो नहीं तड़पाएंगे पैग़ाम आया है

मोहब्बत किसको कहते हैं मोहब्बत कैसी होती है
ये नुक़ता आज वो बतलाएंगे पैग़ाम आया है

मेरी ग़ज़लें मेरे अशआर अब भाने लगे उनको
सुना है बज़्म में वो आएंगे पैग़ाम आया है

जिन्हें बज़्म-ए-तसव्वुर में बुलाता हूं 'मयंक' अक्सर
ख्यालों पर मेरे छा जाएंगे पैग़ाम आया है

जब मौसम-ए-बहार था कुछ याद कीजिये
और तुमको हमसे प्यार था कुछ याद कीजिये

आंखों से जब पिलाई थी तुमने मुझे शराब
दो आतिशा ख़ुमार था कुछ याद कीजिये

देखे बग़ैर मुझको न मिलता तुम्हें सुकूँ
क्या प्यार बे शुमार था कुछ याद कीजिये

नज़रों का एक तीर चलाया था आपने
वो तीर दिल के पार था कुछ याद कीजिये

दोनों ने मिल के खाई थीं क़समें जियेंगे साथ
दोनों को एतबार था कुछ याद कीजिये

आंखों में रात कैसे गुज़ारी थी ए 'मयंक'
कैसा वो इन्तज़ार था कुछ याद कीजिये

ग़म की चादर बिछा के बैठेंगे
यार से दिल लगा के बैठेंगे

बात जब वो करेंगे फ़ुर्क़त की
दर्दे-ए-दिल हम छुपा के बैठेंगे

राह की तीरगी मिटाने को
दिल हम अपना जला के बैठेंगे

मुझ पे इल्ज़ाम जब भी आएगा
लोग सब दूर जा के बैठेंगे

जब सुनेंगे दास्तान-ए 'मयंक'
शर्म से सर झुका के बैठेंगे

कोई तो हमको पुकारे कि सफ़र काटना है
सर से ये बोझ उतारे कि सफ़र काटना है

मैं ज़मीं पर हूं मुझे सूए फ़लक ले चलिये
साथ हों चांद सितारे कि सफ़र काटना है

मांग में अपनी सजाते ही रहो तुम अफ़शां
छुप न जाएं कहीं तारे कि सफ़र काटना है

घर से निकलूं तो हर इक मोड़ पे वो जान-ए-ग़ज़ल
दूर तक मुझको निहारे कि सफ़र काटना है

ज़िंदगानी को 'मयंक' आज करेंगे आसां
कोई हमको न पुकारे कि सफ़र काटना है

□

ये कैसा सवेरा है हम क्या करें
हर इक सू अंधेरा है हम क्या करें

जिसे राहबर हमने समझा था वो
सितमगर लुटेरा है हम क्या करें

निकलना भी चाहें तो मुमकिन नहीं
शब-ए-ग़म ने घेरा है हम क्या करें

मोहब्बत में दुनिया ने चारों तरफ़
ज़हर सा बिखेरा है हम क्या करें

है दुख सुख की परछाइयों में मगन
ये मन ही चितेरा है हम क्या करें

हमारी ख़ुशी पे 'मयंक' आज भी
वही ग़म का पहरा है हम क्या करें

तुम गये क्या बाग़ सूना कर गये
शाख़ के सब फूल पत्ते झर गये

आ गये जो तेरी बज़्म-ए-नाज़ तक
लौटकर फिर वो अपने घर गये

शैर में रंगीनियां क्या लाएंगे
सख़्तियों से फ़िक्र की जो डर गये

जब बदलते वक़्त का ख़ंजर चला
वार कुछ तो सह गये कुछ मर गये

रहम क्यूं सय्याद अब करने लगा
हम क़फ़स से उड़ के जो बे पर गये

ख़ुशबुओं में बस गईं सांसें 'मयंक'
दिल की राहों से वो क्या होकर गये

दार तक उनके क़दम जाते नहीं
जो हक़ीक़त को समझ पाते नहीं

जिनके दिल पर नफ़रतों का राज है
गीत उलफ़त के कभी गाते नहीं

लाल करके मेरे ख़ूं से अपने हाथ
बल भी पेशानी पे वो लाते नहीं

प्यार का इज़हार तो करते हैं वो
प्यार का इज़हार फ़रमाते नहीं

हो गई शायद ख़ता हम से 'मयंक'
वर्ना वो यूं रूठ कर जाते नहीं

शोर में तनहाइयों में जी लिये
इश्क़ की रुसवाइयों में जी लिये

ओढ़ कर माज़ी की यादों का कफ़न
ज़ख्म की गहराइयों में जी लिये

तोड़ कर हाथों से हर राज़-ए-खुशी
दर्द की शहनाइयों में जी लिये

आ गये जब वो तसव्वुर में तो हम
दो घड़ी परछाइयों में जी लिये

मौत से वो क्या डरेंगे जो तेरी
दिल रुबा अंगड़ाइयों में जी लिये

क्या करम की भीख मांगें ए 'मयंक'
जब सितम आराइयों में जी लिये

दर्शन की प्यासी आंखों को नींद न आई रातों में
अश्कों ने आंखों से बहकर आग लगाई रातों में

उस तक मेरा संदेशा ये पहुंचादे ऐ मस्त हवा
मेरे दिल को तड़पाती है ये तनहाई रातों में

हिज्र की रातें कैसे गुज़रीं किसको बताएं हाल अपना
दूर रहा साया भी हमसे इन हरजाई रातों में

प्रेम की वर्षा बरसी लेकिन पागल मन प्यासा ही रहा
तब हमने अपने अश्कों से प्यास बुझाई रातों में

सांसों के तारों में हमने आस के फूल पिरोए हैं
काश कभी आ जाए मिलने वो हरजाई रातों में

एक अजूबा तुम को बताएं ऐसा देखा और न सुना
बरखा ने ही देखो 'मयंक' अब आग लगाई रातों में

दर से उठकर कहीं अब न जाएंगे हम
जो है रस्म-ए-वफ़ा वो निभाएंगे हम

हमको मौक़ा मिला तो उन्हें बज़्म में
अपना अफ़साना-ए-ग़म सुनाएंगे हम

रेत पर नाम लिख-लिख के उनका सदा
होके बेचैन ख़ुद ही निभाएंगे हम

रंग लाएगी इक दिन हमारी वफ़ा
तुम भुलाओगे और याद आएंगें हम

उनकी राहों में तार्विदगी के लिये
ए 'मयंक' अपने दिल को जलाएंगे हम

हमारी याद जब आए तो ख़ुद को प्यार कर लेना
कि लेके आईना नज़रों से नज़रें चार कर लेना

निशाने पर तुम्हारे जानं-ए-मन हम बैठ जाएंगे
नज़र के तीर महफ़िल में ज़रा तय्यार कर लेना

मेरी दीवानगी का गर तमाशा देखना ही है
तो इक़रार-ए-मोहब्बत तुम सर-ए-बाज़ार कर लेना

ख़लिश मीठी सी हो जाएगी पैदा कल्ब-ए-मुज़तर में
वफ़ा तीर ख़ुद अपने जिगर के पार कर लेना

'मयंक' अब जानिब-ए-गुलशन अगर हो आपका जाना
मेरी जानिब से हर शाख़-ए-चमन को प्यार कर लेना

ये जहां ये जहां ये जहां
खूंचिकां खूंचिकां खूंचिकां

गुल जो महका महकने लगा
गुलस्तां गुलस्तां गुलस्तां

वनके आया है गुलचीं यहां
बाग़बां बाग़बां बाग़बां

सूना सूना है तेरे बिना
ये जहां ये जहां ये जहां

दूर कर मेरे दिल की ख़िजां
जान-ए-जां जान-ए-जां जान-ए-जां

तू मिले राह में तो बने
कारवां कारवां कारवां

तोड़कर दिल मेरा चल दिये
तुम कहां तुम कहां तुम कहां

सुन लो अपने 'मयंक' की भी तुम
दास्तां दास्तां दास्तां

घुन शम्अ पे जलने की सब को,
एहसास नहीं जल जाने का

इक दर्द न कोई जान सका,
उस जलते हुये परवाने का

आने से तुम्हारे जान-ए-वफ़ा,
हर चीज़ सुहानी लगती है

अब आ ही गये हो तो बैठो,
ये वक़्त नहीं है जाने का

मस्ताना अदाएं करती हैं,
दीवाना अदाएं करती हैं

ए काश ख़बर वो ले लेते,
क्या हाल है इस दीवाने का

हम उनके हमारे वो हैं चलो,
दुनियां की न कोई बात करो

दोहराओ उन आंखों का क़िस्सा,
और ज़िक्र करो पैमाने का

अब उनको 'मयंक' अपना न कहो,
इस दर्द को तो तनहा ही सहो

मिलता है सुकून-ए-क़ल्ब जहां,
माहौल है वो मयख़ाने का

देख कर दौर-ए-जाम चलता हुआ
गिर गया फिर कोई संभलता हुआ

ऐसे ठहरा है अश्क पलकों पर,
जैसे कोई चराग़ जलता हुआ

चल मोहब्बत की राह में ए दिल
ज़िंदगानी का रुख़ बदलता हुआ

तेरी फ़ुर्क़त में मुझको लगता है
मेरा साया मुझे निगलता हुआ

छोड़ आए हैं उनकी महफ़िल में
ए 'मयंक' इक सवाल जलता हुआ

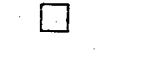

ग़म-ए-जाना को पाकर दिल हमारा शाद होता है
ये गुलशन तो ख़िजां के दौर में आबाद होता है

राहे उलफ़त में जो मिटते हैं वो अकसीर होते हैं
वो ख़ुश क़िसमत है जो इस राह में बरबाद होता है

निकल जाती है ख़ूब-ए आदमियत जिनके ज़हनों से
उन्हीं में से कोई नमरूद और शद्दाद होता है

हर इक पंछी को रखता है क़फ़स में प्यार से लेकिन
मगर कुछ भी कहो सय्याद फिर सय्याद होता है

खड़े हैं 'मयंक' अरबाब-ए-उलफ़त मुन्तज़िर सारे
ज़बान-ए-नाज़ से क्या जाने क्या इरशाद होता है

दिल-ए-नाशाद को देकर तसल्ली शाद करते हैं
तुम्हारी याद से दुनिया-ए-दिल आबाद करते हैं
तुम्हारे तज़किरे उनवान बनके आए ग़ज़लों में
मेरे अश्आर सुनकर एहल-ए-फ़न भी स्वाद करते हैं
वही शिकवा गिला करते हैं जो कम ज़र्फ़ होते हैं
जो एहल-ए-ज़र्फ़ होते हैं वो कब फ़रयाद करते हैं
उन्हीं की ज़िंदगी पर ज़िंदगानी रश्क करती है
किसीके इश्क़ में जो ज़िंदगी बरबाद करते हैं
अजब है रिश्त-ए-उलफ़त गुलिस्तां से 'मयंक' अपना
के हम कुँज-ए-क़फ़स में भी चमन को याद करते हैं

□

मेरे पास आओ निगाहें मिलाओ
मुझे भी शराब-ए-मोहब्बत पिलाओ
किसी दिन मेरे ज़र्फ़ को आज़माओ
मेरे दिल पे नज़रों के खंजर चलाओ
अगर लुत्फ़ लेना है शाम-ए-अलम का
मेरी तरह पलकों पे तारे सजाओ
ज़मीं से फ़लक तक तुम्हें ढूंढ़ता हूं
छुपे हो कहां कुछ पता तो बताओ
कहीं पढ़ न लें लोग चेहरा तुम्हारा
संभलकर ज़रा उनकी महफ़िल में जाओ
मैं खुद से बिछुड़कर कहीं खो गया हूं
खुदारा कहीं से मुझे ढूंढ़ लाओ
'मयंक' आबरू-ए-वफ़ा है इसी में
के अब सूरत-ए-शाम जलते ही जाओ

नज़रों से दूर सारे नज़ारे चले गये
छुपने लगा जो चांद तो तारे चले गये
मैं तो निगाह-ए-यार के तेवर में खो गया
वो तीर मेरे दिल में उतारे चले गये
तेरे बग़ैर सांस भी लेना मुहाल था
फिर भी तेरे बग़ैर गुज़ारे चले गये
तुमने पलट के देखा न आवाज़ दी हमें
हम हर नफ़स तुम्हीं को पुकारे चले गये
तनहाइयों की नज़्र हुई ज़िंदगी 'मयंक'
वो क्या गये के दिलके सहारे चले गये

हमें भूल कर तुम दिखाओ तो जानें
न हमको कभी याद आओ तो जानें
तुम्हें हम भुला दें ये मुमकिन नहीं है
मगर याद तुम भी न आओ तो जानें
मोहब्बत में खुद को मिटाया है लेकिन
निशान-ए-मोहब्बत मिटाओ तो जानें
नज़र से गिराना तो आसां है लेकिन
निगाहों में अपनी चढ़ाओ तो जानें
उमड़ता है आंखों से तूफ़ान-ए-ग़म जो
इसे अपने दिल में छुपाओ तो जानें
जिन आंखों पे हैं मयकदे भी तसद्दुक
उन आंखों से हमको पिलाओ तो जानें
'मयंक' हार बैठे हैं बाज़ी-ए-उलफ़त
ये एहसास हमको दिलाओ तो जानें

कली ने गुल ने बहारों ने इन्तेज़ार किया
तुम्हारा शब के सितारों ने इन्तेज़ार किया

तुम्हारे आने की उम्मीद पर खिलीं कलियां
महकते गुल की क़तारों ने इन्तेज़ार किया

हमारे साथ सितारे भी रात भर जागे
सहारा देके सहारों ने इन्तेज़ार किया

तमाम रात गुज़ारी है लहरें गिन-गिन के
तड़प-तड़प के किनारों ने इन्तेज़ार किया

'मयंक' आए न महफ़िल में तुम तो महफ़िल में
हमारे साथ हज़ारों ने इन्तेज़ार किया

वफ़ा के दीप हर सू जलाए बैठा हूं
चले भी आओ के राहें सजाए बैठा हूं

मेरी वफ़ा का बदल देंगे वो वफ़ा से मुझे
उमीद ऐसी मैं उनसे लगाए बैठा हूं

जो ज़ख्म तुमने दिये थे वो नक़्श हैं दिल पर
सहारा जीने का उनको बनाए बैठा हूं

तुम्हारी राह में हर गाम रौशनी के लिये
चराग़ आंखों के कब से जलाए बैठा हूं

न देगा साथ बुरे वक़्त में कोई भी 'मयंक'
हर एक दोस्त को मैं आज़माए बैठा हूं

तुम्हारी राह में सजदे किये बहारों ने
तुम्हारे नक़्श-ए-क़दम चूमे हैं सितारों ने
नहीं है मेरा कोई अब सिवा तेरे ऐ दोस्त
के साथ छोड़ दिया मेरा ग़म गुसारों ने
डुबोया जब मेरी कश्ती को मौज-ए-तूफां ने
तो बढ़ के थाम लिया है मुझे किनारों ने
नज़र न आए हो तुम आज तक कहीं लेकिन
तुम्हें पुकारा है हर गाम दिल फ़िगारों ने
मिला गुलों से न कलियों से आज तक ए 'मयंक'
जो प्यार हमको दिया है चमन के ख़ारों ने

किसी को किस्स-ए-ग़म अब न हम सुनाएंगे
हज़ार ग़म हों मगर फिर भी मुस्कुराएंगे
चले भी आईये इन झिलमिलाती रातों में
के हम भी राहों में फ़र्श-ए-नज़र बिछाएंगे
वफ़ा की राह में दुश्वारियां हों लाख मगर
वफ़ा की राह में आगे क़दम बढ़ाएंगे
हज़ार परदों में दीदार-ए-यार कर लेंगे
तुम्हें कुछ ऐसे तसव्वुर में हम बसाएंगे
हमारे बाद भी दुनिया न हमको भूलेगी
'मयंक' इश्क़ में कुछ नाम करके जाएंगे

जिगर में दर्द-ए-मोहब्बत छुपाए बैठे हैं
किसे बताएं कि हम चोट खाए बैठे हैं

हज़ार जान से कुरबां मैं उनकी आंखों पर
जो मेरी आंखों से नींदें चुराए बैठे हैं

समझ में कुछ नहीं आता जवाब क्या होगा
सवाल बन के वो दिल में समाए बैठे हैं

उन्हें न पास-ए-मोहब्बत है और न पास-ए-वफ़ा
हम उनके प्यार में हस्ती मिटाए बैठे हैं

'मयंक' आना है उनको ज़रूर आएंगे
चराग़ उम्मीदों का हम भी जलाए बैठे हैं

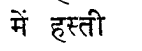

जब कभी हम उन्हें भुलाते हैं
याद वो बार-बार आते हैं

हम खुशी की तरफ़ जो जाते हैं
ग़म के साए उभर के आते हैं

जब भी हम मय को मुंह लगाते हैं
जाम में अक्स उनका पाते हैं

उनको अपना कहूं तो रुसवाई
भूलता हूं तो याद आते हैं

उनके हमराह दिन जो गुज़रे थे
क्यूं 'मयंक' आज याद आते हैं

यूं न रह रह के हमें तड़पाइये
आइये अब तो क़रीब आ जाइये

भूल जाना खुद को आसां है मगर
कैसे भूलें आपको बतलाइये

करके गुल सब नफ़रतों की मशअलें
प्यार की शमअें जलाते जाइये

अब जुदाई दुश्मन-ए-जां बन गई
ख़्वाब में आकर गले लग जाइये

दूर कीजे दिल की बेचैनी 'मयंक'
अब लबों पर मुस्कुराहट लाइये

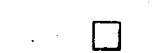

तुमने छेड़ा है मेरे दिल का साज़
तिरछी नज़रों का खूब है अंदाज़

आपने प्यार से जो दी आवाज़
वज उठा आज मेरे दिल का साज़

आईने से मिले है आईना
साज़ के साथ जिस तरह आवाज़

हम तुम्हारे हैं तुम हमारे हो
आंखों आंखों में ही रहे ये राज़

आज उनको 'मयंक' अपना लो
पर नहीं फिर भी तुम करो परवाज़

हर क़दम राह-ए-वफ़ा में साथ चल
ए मेरी जान-ए-हया जान-ए-ग़ज़ल

जाम में है ऐसे तेरा अक्स-ए-रुख़
मुस्कुराए झील में जैसे कंवल

तू कहे तो वक़्त का रुख मोड़ दूं
तेरा पैशानी पे क्यूं आए हैं बल

सौ बरस की जिंदगी बेकार है
क़ीमती है प्यार का बस एक पल

अब तो तेरे रूबरू है ए 'मयंक'
होश में आ क्यूं बहकता है संभल

तुम न नज़रों की जब करो आशा
कैसे समझोगे प्यार की भाषा

जागते में भी पास आओ कभी
समझो सपनों की कुछ तो परिभाषा

कमसिनी का ज़माना बीत गया
अब मोहब्बत की कुछ पढ़ो भाषा

प्यार से देख लो हमारी तरफ़
एक मुद्दत से है यही आशा

फ़ितरत-ए-हुस्न क्या कहूं ए 'मयंक'
पल में तोला तो पल में है माशा

हसीन कितने हैं उनका शबाब क्या कहिये
वो लाजवाब हैं उनका जवाब क्या कहिये

नकाब रुख से उठाया तो यूं लगा जैसे
घटा से निकला हो इक माहताब क्या कहिये

उसे जो देखे बहक जाए मेरा दावा है
वो आंखें हैं, के हैं, जाम-ए-शराब क्या कहिये

जो देखे देखता रह जाए बस खुदा की क़सम
ये कमसिनी में बहार-ए-शबाब क्या कहिये

बहार देख के शरमाए ए 'मयंक' जिसे
लबों पे उनके वो रंग-ए-गुलाब क्या कहिये

ए काश हमें तुम से जाना इक बार मोहब्बत हो जाती
हमको भी मयस्सर दुनिया में कोनन की दौलत हो जाती

बे पर्दा अगर तुम आ जाते इक बार तसव्वुर में मेरे
क्या रोज़-ए-क़यामत से पहले दुनिया में क़यामत हो जाती

इक तेरे तसव्वुर को लेकर खाता न मैं दर दर की ठोकर
दर्शन जो तेरा हो जाता तकमील-ए-इबादत हो जाती

दुनिया के ग़मों से घबराकर मैं छोड़ चुका था राह-ए-वफ़ा
मिलते न अगर तुम मुझको तो तनहाई की आदत हो जाती

रोते रोते हंस देते हैं हंसते हंसते रो देते हैं
वो देखते ऐसे में ज़ो 'मयंक' उनको भी मोहब्बत हो जाती

ज़ुल्फ़ उनकी महक महक जाए
ज़िंदगानी बहक बहक जाए

वो जो नज़रें ज़रा उठाएं अगर
आतिश-ए-दिल दहक दहक जाए

तिरछी नज़रों से वो जो देखें कभी
दिल हमारा लहक लहक जाए

उनसे बाद-ए-सबा जो छेड़ करे
ज़ुल्फ़-ए-मुश्कीं बहक बहक जाए

चूड़ियों की खनक है ऐसी 'मयंक'
जैसे चिड़िया चहक चहक जाए

□

हर क़दम पर है अन्धेरा क्या करें
दूर हम से है सवेरा क्या करें

वक़्त के हाथों हुये बे: खानुमा
वक़्त है अपना लुटेरा क्या करें

जो हमें आशा दिलाते थे कभी
उनको मायूसी ने घेरा क्या करें

एक पल की भी नहीं जिसको ख़बर
वो कहे सब कुछ है मेरा क्या करें

अपना अब कोई नहीं है ए 'मयंक'
धुंध है हर सू घनेरा क्या करें

सितारे जिन्हें ढूंढ़ने जा रहे हैं
मेरी बज़्म में वो चले आ रहे हैं

ये बाद-ए-सबा हमको बतला रही है
के वो आज ज़ुल्फ़ों को लहरा रहे हैं

बहारों से कहदो के पलकें बिछा दें
वो सैर-ए-चमन के लिए आ रहे हैं

ये कौन आ रहा है तसव्वुर में मेरे
के सब ग़म के बादल छटे जा रहे हैं

'मयंक' उनसे कहदो के नज़रें झुकालें
के रुख़सार कलियों के मुरझा रहे हैं

कहीं हैं ख़िज़ाएं कहीं गुल खिले हैं
अजब ज़िंदगानी के ये सिलसिले हैं

मयस्सर ये खुशियां ज़माने की उनको
जो ग़म थे मुक़द्दर से हमको मिले हैं

चले तो हैं हमराह-ए-उलफ़त में लेकिन
अभी दूर हमसे सभी काफ़िले हैं

ज़ुबां मेरी ख़ामोश है मेरे हमदम
मगर मेरे दिल में उठे वलवले हैं

संभल कर यहां तू क़दम अपना रखना
'मयंक' इस जहां में बहुत ज़लज़ले हैं

अब ख़ुशी मेरे क़रीब आती नहीं
अब कोई शै दिल को बहलाती नहीं

मैं निकल आया हूं इतनी दूर तक
अब तेरी आवाज़ भी आती नहीं

रौशनी की उससे क्या उम्मीद हो
जिस दिये में तेल है बाती नहीं

छाई है दहशत बहारों में यहां
गीत भी बुलबुल कोई गाती नहीं

हर तरफ़ फैला है चादर रात की
राह कोई भोर तक जाती नहीं

बोझ ग़म का जो उठाले ए 'मयंक'
अपना ऐसा कोई भी साथी नहीं

भटके हुये जो थे हद-ए-मंज़िल में आ गये
ख़ुश क़िस्मती से जो तेरी महफ़िल में आ गये

हर शै में देखती रही मेरी नज़र तुम्हें
जब दिल में झांका आप मेरे दिल में आ गये

जिन पर तेरी निगाह-ए-करीमाना पड़ गई
मौजों में चल के दामन-ए-साहिल में आ गए

वाक़िफ़ थे तुम तो राह के हर इक घुमाव से
तुम ए 'मयंक' किसलिए मुश्किल में आ गये

भद्दे अलफ़ाज़ की तकरार बुरी लगती है
आज हर सुर्ख़ी-ए-अखबार बुरी लगती है

चांद का रूप बदल कर तू न निकले जिसमें
ऐसी हर शब मुझे दिलदार बुरी लगती है

जिनकी आवाज़ हमें फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल कर दे
हमको पायल की वो झंकार बुरी लगती है

तुमने तकरार भी की हम न बुरा मानें कभी
और तुम्हें सादा सी गुफ़्तार बुरी लगती है

लब सिये बैठा हूं इस वास्ते महफ़िल में 'मयंक'
मेरी हर बात तो सरकार बुरी लगती है

गैसू ग़म-ए-जाना के संवर जाएंगे इक दिन
हर हस्ती-ए-फ़ानी से गुज़र जाएंगे इक दिन

ये काम भी हम दुनिया में कर जाएंगे इक दिन
पाते ही इशारा तेरा मर जाएंगे इक दिन

सर अपने चढ़ा रक्खा है जिन फूलों को तुमने
वो फूल भी मुरझा के बिखर जाएंगे इक दिन

जिस बज़्म में जाते हुये डरते हैं अभी हम
उस बज़्म में बे खौफ़-ओ-खतर जाएंगे इक दिन

कुछ दिन के लिए आए हैं दुनिया में 'मयंक' हम
फिर लौट के सब अपने ही घर जाएंगे इक दिन

किसी की बात का हरग़िज न कुछ असर लूंगा
लगेगी तुम पे जो तोहमत वो अपने सर लूंगा

मैं चश्म-ए-साक़ी को बदली हुई जो देखूंगा
तो अपने ख़ून से ख़ुद अपना जाम भर लूंगा

न होने दूंगा सर-ए-बज़्म में तुम्हें रुसवा
फ़साने इश्क़ के सब अपने नाम कर लूंगा

तू वादा करके भुलादे तेरी खुशी मैं तो
तमाम उम्र तेरा इन्तज़ार कर लूँगा

'मयंक' उनके तसव्वुर में डूबकर मैं भी
सर-ए-बहार किसी गुल को प्यार कर लूँगा

□

ग़म-ए-हयात का झगड़ा ज़रा मिटा जाओ
तुम अपना फूल सा चेहरा ज़रा दिखा जाओ

शहीद-ए-नाज़ हूं मैं कुश्त-ए-मोहब्बत हूं
लहद पे मेरी चराग़-ए-वफ़ा जला जाओ

वफ़ा के नाम पे तसकीन-ए-रूह की खातिर
तुम अपने हाथों से मय्यत मेरी सजा जाओ

तमाम उम्र तो तरसा हूं बूंद बूंद को मैं
क़ज़ा क़रीब है आंखों से ही पिला जाओ

बहक न जाए सर-ए-बज्म ये तुम्हारा 'मयंक'
तसव्वुर की दुनिया पे आके छा जाओ

कली ने फूल ने खारों ने इन्तेज़ार किया
तमाम रात सितारों ने इन्तेज़ार किया

हमारा ज़िक्र भी आया न महफ़िलों में कहीं
मगर तुम्हारा हज़ारों ने इन्तेज़ार किया

झुकी झुकी सी नज़र क्यूं नहीं उठी आख़िर
मेरी नज़र के इशारों ने इन्तेज़ार किया

ये बात और है हम रोशनी को तरसे हैं
मगर हमारा सितारों ने इन्तेज़ार किया

'मयंक' मैंने सहारों से फेरलीं नज़रें
हज़ार बार सहारों ने इन्तेज़ार किया

जाम अपनी मोहब्बत का सरे आम पिलाना
काशी का न काबे का मुझे खौफ दिखाना

मर जाऊं तो ग़म में मेरे आंसू न बहाना
दो फूल खुशी के मेरी तुर्बत पे चढ़ाना

तुम देखोगे हो जाएगा इक पल में शकिस्ता
आईना किसी दिन मेरा रिन्दों को दिखाना

तुम होश अगर मेरे उड़ाओ तो मैं जानूं
सुनते हैं के आता है तुम्हें होश उड़ाना

दुनिया की तलब, तेरा 'मयंक' अब करे क्यूँ कर
तू साथ मेरे है तो ठोकर में ज़माना

नाव तूफ़ां में है मेरी और किनारा दूर है
आसमां से मेरी क़िस्मत का सितारा दूर है
था हमें भी उनकी क़ुरबत का शरफ़ हासिल कभी
क्या बताएं हमसे जब दिलबर हमारा दूर है
सेकड़ों पर्दे हैं पहरे हैं दीवारें बीच में
जान-ए-महबूबी के चहरे का नज़ारा दूर है
सेकड़ों दिल हैं के जिनको कुर्बत है नसीब
एक मेरा दिल है जो क़िसमत का मारा दूर है
बे सहारों में तुम अपना नाम लिखवा लो 'मयंक'
क्यूं के अब तो अपने जीने का सहारा दूर है

ज़िंदगानी के ये निशां देखो
कैसे बनते हैं आशियां देखो
चलते चलते जो कोई मिल जाए
ऐसे बनते हैं कारवां देखो
हुस्न और इश्क़ साथ साथ मिले
फिर मोहब्बत को तुम जवां देखो
मेरे ज़ख़्मों से रोशनी लेकर
जगमगाता है आसमां देखो
आशिक़ी में 'मयंक' दुनिया की
मिट गईं कितनी हस्तियां देखो

तेरे रुखसार के गुल जब भी महक जाते हैं
दिल में अंगारे मोहब्बत के दहक जाते हैं

उनके गैसू जो सर-ए-शाम लहक जाते हैं
हमने देखा है के गुलज़ार महक जाते हैं

जब भी मिल जाती हैं उन आंखों से मेरी आंखें
यक बः यक जैसे प्याले से खनक जाते हैं

जाद-ए-इश्क़ में आ जाते हैं ऐसे भी मक़ाम
दिल जहां देखने वालों के धड़क जाते हैं

जाम आंखों के 'मयंक' होश में पीना सीखो
कांपते हाथों से पैमाने छलक जाते हैं

□

पास आकर अब न यूं शरमाइये तरसाइये
तालिब-ए-दीदार हैं दीदार तो दिखलाइये

मेरे दिल की बात तो तुम जान ही लोगे मगर
कम से कम कुछ हाल अपना भी हमें बतलाइये

उंगलियों से रेत पर अब नाम लिख लिखकर मेरा
खुद मेरी तक़दीर लिखिये खुद मिटाते जाइये

आइये तीर-ए-निगाहे तेज़ लेकर आइये
छेदकर सीना हमारा ज़ख्म-ए-दिल चमकाइये

दर्द की लज़्ज़त का लेना है मज़ा तो ए 'मयंक'
दिल में अपने आतिश-ए-दर्द-ए-वफ़ा भड़काइये

उनके जलवे चश्म-ओ-दिल पर इस तरह से छा गये
चांद निकला तो ये दुनिया ने कहा वो आ गये

उनकी बज़्म-ए-नाज़ में बैठे थे उनके आस पास
मुझको जब देखा मेरे एहबाब कुछ शरमा गये

यूं हुआ महसूस जैसे के घटाएं छा गईं
उनके गैसू जब फ़िजाओं में कभी लहरा गये

जान देकर हमने रक्खा जान-ए-उलफ़त का भरम
आप तो जामे मोहब्बत हर तरफ़ छलका गये

खो गये हम फिर न जाने किस जहां में ए 'मयंक'
याद वो गुज़रे जमाने जब भी हम को आ गये

नज़र नवाज़ सितारों में तुम समाए हो
चमन की मस्त बहारों में तुम समाए हो

नहीं है मेरा सहारा कोई तुम्हारे सिवा
सहारा देके सहारों में तुम समाए हो

तुम्हारा अक्स सितारों में झिलमिलाता है
के आसमां के सितारों में तुम समाए हो

बचालो अब तो मेरा ये सफ़ीना-ए-हस्ती
भवंर में मैं हूं किनारों में तुम समाए हो

'मयंक' ढढ़ता फिरता है हर बशर में तुम्हें
सुना है जब से कि सारों में तुम समाए हो

उनका शबाब उम्र नदी का चढ़ाव है
लेकिन हयात की ज़रा कमज़ोर नाव है
तुम लाख पारसाई का दावा करो मगर
शाहिद तेरे सितम का मेरा घाव घाव है
जिस दिन से तुमने चश्म-ए-करम हम से फेर ली
उस दिन से ज़िंदगी में हमारी तनाव है
सब्र-ओ-सुकून ताब-ओ-तवां सब ही बह गये
दरिया-ए-वक्त का यहां ऐसा बहाव है
मरहम लगाए कौन मेरे जख्म पर 'मयंक'
हर चोट ला इलाज है नासूर घाव है

हनोज़ ज़र्फ़ मेरा आज़माए जाते हैं
ठहर ठहर के सितम मुझ पे ढाए जाते हैं
तुम्हारे नाम से मनसूब पाए जाते हैं
जहां भी गीत मेरे गुनगुनाए जाते हैं
हिनाई उंगलियां अपनी दबा के दांतों में
न जाने किसलिये वो मुस्कुराए जाते हैं
तमाम रात उन्हें भी सुकून-ए-दिल न मिले
जो नींद आंखों से मेरी उड़ाए जाते हैं
हज़ार बार दिया मैंने इम्तेहान-ए-वफ़ा
मगर वो फिर भी मुझे आजमाए जाते हैं
'मयंक' बढ़ के बुझा दो ये नफ़रतों के चिराग़
उजाले प्यार की बसती जलाए जाते हैं

सांपों का अंबार लगा है आज अंधेरे आंगन में
बैठे हैं दामन को बचाए दूर सपेरे आंगन में
बाहर से कुछ दिखने वाले अन्दर से कुछ होते हैं
हमने जब बंगले में झांका सब थे लुटेरे आंगन में
अबला सबला दिखती हैं सब सड़कों और बाजारों में
आज वही बीमार पड़ी हैं बाल बिखेरे आंगन में
आज सवालों ने क्या पूछा एक सवाल सवालों से
प्रश्न चिन्ह क्यों उभरा हुआ है डाले डेरे आंगन में
बनके वहशी आज अंधेरा रोशनी खाता है यारो
तनहाई मुझको देखे क्यूं आंख तरेरे आंगन में
मेरी आंखें हैं अभिलाषी उसके दर्शन की ए 'मयंक'
दीप जला जाता है जो भी सांझ सवेरे आंगन में

प्यार महंगा दुश्मनी सस्ती हुई
उफ़ रे इनसां क्या तेरी हस्ती हुई
तुम मेरे दिल से निकल कर क्या गए
आज वीरां दिल की ये बस्ती हुई
आपने मेरा उड़ाया है मज़ाक़
आज से रुसवा मेरी मस्ती हुई
छोड़कर मझधार में वो चल दिये
नज़्र-ए-तूफ़ां फ़िर मेरी हस्ती हुई
शर्म से हम पानी पानी थे 'मयंक'
ज़िंदगी जब माईल-ए-पस्ती हुई

हमें नाज़-ओ-अदा ने मार डाला
इस अंदाज़-ए-वफ़ा ने मार डाला

मसीहा की मसीहाई के सदके
हमें ख़ौफ़-ए-क़ज़ा ने मार डाला

हसीनों का करम देखो कि हम को
मोहब्बत के बहाने मार डाला

बुतों को दोष क्या देते जहां में
हमें तो बस ख़ुदा ने मार डाला

शिकायत वद् दुआ की क्या करें हम
'मयंक' हम को दुआ ने मार डाला

अब हक़ीक़त के सामने आओ
कुछ खिलौनों से दिल को बहलाओ

किस लिए दूर दूर रहते हो
आओ आग़ोश में मेरे आओ

लोग नफ़रत करें तो करने दो
तुम तो बस गीत प्यार के गाओ

तुम मेरी ज़िंदगी का मक़सद हो
तुम मेरी ज़िंदगी पे छा जाओ

जज़्ब-ए-इश्क के तूफ़ैल 'मयंक'
इश्क में तुम भी नाम कर जाओ

वो कभी हमसे वफ़ा करते नहीं
हम मगर उनसे गिला करते नहीं

दोस्ती की बात करते हैं मगर
दोस्ती का हक़ अदा करते नहीं

कट गई जो उम्र उनके प्यार में
हम तो कुछ इसका गिला करते नहीं

दर्द जिनके दिल में होता है जनाब
वो किसी का भी बुरा करते नहीं

इश्क़ तो इक बार होता है 'मयंक'
इश्क़ जग में बारहा करते नहीं

दास्तां प्यार की आंखों से बयां होती है
ये हक़ीक़त है के नज़रों की ज़ुबां होती है

एक दूजे में समा जाएं ये मुमकिन ही नहीं
ऐसी तक़दीर मोहब्बत की कहां होती है

प्यार करते भी रहें और तड़पते भी रहें
ऐसी उलफ़त भी ज़माने में जवां होती है

गीली लकड़ी की तरह बुझता सुलगता ही रहा
हद मेरी सोज़िश-ए-पिनहां की कहां होती है

मैं नहीं चांद सितारे भी ये कहते हैं 'मयंक'
पास वो हों तो हर इक रात जवां होती है

हुस्न की शान यूँ दिखाते हैं
बस हमें खाक में मिलाते हैं

जज़्ब-ए-ग़म की खैर हो यारब
अश्क आंखों में आये जाते हैं

पहले हमसे नज़र मिलाते थे
आज आंखें हमें दिखाते हैं

इश्क़ में ग़म ही ग़म मिलेंगे हमें
सब यहा दास्तां सुनाते हैं

प्यार की आग बुझ नहीं सकती
फिर 'मयंक' अश्क क्यूं बहाते हैं

जब भी कलियों पर जवानी आ गई
इक बहार-ए-शादमानी आ गई

मिटता जाता है शराफ़त का निशां
ग़ासियों की हुक्मरानी आ गई

जब असर जज़्ब-ए-मोहब्बत का हुआ
ठहरे दरिया में रवानी आ गई

खत मिला है वो नहीं आ पाएंगे
शुक्रिया कुछ तो निशानी आ गई

फ़ैज़ है ये जज़्ब-ए-उलफ़त का 'मयंक'
दास्तां अपनी सुनानी आ गई

आप बेदाद पे बेदाद किये जाते हैं
हम तो फ़रियाद पे फ़रयाद किये जाते हैं

जाने क्यूं लोग मेरे प्यार की निंदा कर के
ज़िंदगानी यूं ही बरबाद किये जाते हैं

जो तेरे साथ गुज़ारे थे बहारों में कभी
उन हसीं लम्हों को हम याद किये जाते हैं

उन की यादों के गुलाबों से सर-ए-शाम 'मयंक'
दिल की दुनिया को हम आबाद किये जाते हैं

अश्क आंखों से मेरी जब भी निकल जाते हैं
कई दीपक शब-ए-तारीक में जल जाते हैं

तू हक़ीक़त से बहलता नहीं लेकिन-ए-दिल
लोग मिट्टी के खिलौनों से बहल जाते हैं

खुश्क पत्तों की खनक कान में जब आती है
उन से मिलने के लिये घर से निकल जाते हैं

जब कभी होते हैं वो मेरे तसव्वुर में मकीं
कितने अरमान मेरे दिल में मचल जाते हैं

एक मीठी-सी कसक होती है सीने में 'मयंक'
तीर नज़रों के मेरे दिल पे जो चल जाते हैं

आ के मेरी आंखों से नींद भी उड़ाते हैं
जब भी मैं भुलाता हूं याद और आते हैं

जिन की याद के गुंचे दिल में हम खिलाते हैं
वो तो बस निगाहों से बिजलियां गिराते हैं

हम को ग़म की दुनिया से इस कदर मोहब्बत है
आंसुओं से हम अपनी अंजुमन सजाते हैं

नाम उन का होता है दहर में अमर यारो
इश्क़ में जो हंस-हंस कर हस्तियां मिटाते हैं

वो कभी तो समझेंगे ग़म के इस फ़साने को
जिन पे ये 'मयंक' अपनी हर ख़ुशी लुटाते हैं

नज़र में आप की तस्वीर जब समाई है
मेरी हयात अंधेरों में जगमगाई है

तुम्हारी याद का छाया हुआ था ऐसा नशा
हमारी याद भी हम को कभी न आई है

धुंवा उठा है मोहब्बत के आशियाने से
किसी ने आग यहां जान कर लगाई है

चमन की शाम है साग़र है और मीना है
ये किस की याद में बज़्म-ए-तरब सजाई है

ज़माना लाख शिकायत करे तो क्या शिकवा
'मयंक' हमने तो रसम-ए-वफ़ा निभाई है

जिस पे तेरी नज़र गई होती
उस की क़िसमत संवर गई होती

ज़िंदगानी संवर गई होती
प्यार में जो गुज़र गई होती

चांद बदली में छुप गया होता
ज़ुल्फ़ रुख़ पर बिखर गई होती

तुम जो आ जाते पुरसिश-ए-ग़म को
ग़म की नदी उतर गई होती

वो न आते जो ख्वाब में ए 'मयंक'
आरज़ू कब की मर गई होती

कई अरमां मेरे दिल में मचल कर रह गये यारो
मगर क़िसमत न बदली हम बदल कर रह गये यारो

कई अरमान दिल में थे मगर निकले नहीं अब तक
फ़क़त आंखों से कुछ आंसू निकल कर रह गये यारो

उन्हें भी याद कर लेना ज़रा जश्न-ए-मसरर्त में
जो परवाने शमा पे आज जल कर रह गये यारो

कोई भी मौत से टक्कर न ले पाया ज़माने में
कई जां बाज़ अपने हाथ मलकर रह गये यारो

इरादा था यही अपना के मंजिल पर पहुंच जाते
'मयंक' अब क्या कर कुछ दूर चल कर रह गये यारो

गुसताखि-ए-निगाह को अब भूल जाइये
कहना है राज़ दिल का ज़रा पास आइये

ये दौर दुश्मनी का नहीं दोस्ती का है
हर गाम पर चराग़-ए-मोहब्बत जलाइये

देती है सुबहै नौ यही पैग़ाम बार-बार
उस हुस्न-ए-पुर बहार के क़ुर्बान जाइये

कब से बिछी है मसनद-ए-दिल आप के लिये
आकर कभी तो वज़्म की रौनक़ बढ़ाइये

जीना है इस जहां में अगर तुम को ए 'मयंक'
कल जो हुआ था आज उसे भूल जाइये

□

रुख़ से नक़ाब अपने उठाता नहीं कोई
बिजली हमारे दिल पे गिराता नहीं कोई

इस तरह अश्क-ए-ग़म तो बहाता नहीं कोई
दौलत यूं प्यार की ये लुटाता नहीं कोई

बैठे हैं सेहमे-सेहमे सभी लोग वज़्म में
क्या हादसा हुआ है बताता नहीं कोई

जब से मेरे चमन की बहारें जवां हुईं
कर के इशारे हम को बुलाता नहीं कोई

आ जाइये 'मयंक' बुलाता है आप को
बज़्म-ए-हयात रोज़ सजाता नहीं कोई

हसीन रात है मेरे क़रीब आ जाओ
वफ़ा का वास्ता मेरे हबीब आ जाओ
मेरे नसीब के मालिक हो तुम ही मेरे हबीब
जगाने आज मेरा तुम नसीब आ जाओ
ब जुज़ तुम्हारे मेरा कौन है ज़माने में
पुकारता है तुम्हें ये ग़रीब आ जाओ
हुज़ूर आपका बिमार हूं खुदा की क़सम
तुम एक बार तो बनकर तबीब आ जाओ
'मयंक' आज तुम्हें दे रहा है जाम-ए-वफ़ा
वफ़ा का वास्ता मेरे क़रीब आ जाओ

सब से क्या खुद से भी दामन को बचाना होगा
तेरी उलफ़त में हज़ारों को भुलाना होगा
क्या खबर थी के कभी आएगी ऐसी भी घड़ी
नाम लिख लिख के तेरा खुद ही मिटाना होगा
तेरी उलफ़त को इबादत का मैं दर्जा दूंगा
दिल के मन्दिर में फ़क़त तुझको बिठाना होगा
याद है उसका वो हंसते हुए कहना अब तक
मेरा हर नाज़ तुझे हंसके उठाना होगा
ए 'मयंक' जा नहीं पाएगा निकल कर दिल से
दर्द को उनके यहीं लौट के आना होगा

रस्म-ए-दुनिया के हिसारों से निकल कर आएं
आप आएं तो इस आदत को बदलकर आएं
दर्द-ए-फुर्कत तो नहीं देता है पल भर आराम
ग़म के मारो चलो कुछ दूर टहल कर आएं
कौन जाने इसे कल वक़्त कहां ले जाए
दो क़दम आज तेरे साथ तो चल कर आएं
अब तो बरदाश्त नहीं होती है सोज़िश दिल की
आओ आजाओ इस आतिश को उगल कर आएं
ख़ुद मेरे बस में नहीं है दिल-ए-दिवाना मेरा
ए 'मयंक' उनसे ये कहदो के संभल कर आएं

□

चांद तारे मेरी राहों में बिखर जाते हैं
वो जो आते हैं तो हालात संवर जाते हैं
तेरी नज़रों का करम हम पे जो हो जाता है
मुस्कराते हुए दिन रात ठहर जात हैं
उनके दम से हैं ये मस्ती भरी राहें रौशन
वो जिधर जाते हैं मयख़ाने उधर जाते हैं
हुस्न की बज़्म का दस्तूर तो देखे कोई
अहले दिल आते हैं और अहले नज़र जाते हैं
सहमा सहमा-सा नज़र आता है माहौल 'मयंक'
लेलि-ए-वक्त के गैसू जो संवर जाते हैं

उन्हें हमारी वफ़ाओं पे एतबार नहीं
मगर ये कैसे कहें हम कि हमको प्यार नहीं
हनोज़ हम पे इनायत न हो सकी उनकी
हमारे जैसा जहां में गुनहगार नहीं
खुशी के साथ अलम का अटूट रिश्ता है
खिजां को साथ न लाए तो वो बहार नहीं
गुल और ख़ार का है साथ चोली दामन का
जुदा गुलों से रहे ऐसा कोई ख़ार नहीं
नज़र के तीर की ख्वाहिश है सबको दुनिया में
'मयंक' तीर वो क्या जो जिगर के पार नहीं

रंग पल पल बदलती रही ज़िन्दगी
उठती गिरती सम्हलती रही ज़िन्दगी
जिस्म बेजान था ज़ेहन खामोश था
बनके अरमां धड़कती रही ज़िन्दगी
आरज़ू की मचलती हुई ताल पर
महफ़िलों में थिरकती रही ज़िन्दगी
तुम गए रूठ के जब से ए जानेमन
बनके बेवा, सिसकती रही ज़िन्दगी
उनकी चश्मे करम हो गई जो कभी
बेखुदी में बहकती रही ज़िन्दगी
जब वो जाने बहारां 'मयंक' आ गया
फल बनके महकती रही ज़िन्दगी

वो ही फूलों से ज़ख़्म खाते हैं
जो हसीनों से दिल लगाते हैं

जान लेते हैं हाल एहले-नज़र
लाख अश्कों को हम छिपाते हैं

उनके वादों पै क्या यक़ीन कर
वादा करके जो भूल जाते हैं

चन्द लम्हात की खुशी पाकर
लोग माज़ी को भूल जाते हैं

दुश्मने-जानोदिल वही है 'मयंक'
जिसपै हम जानोदिल लुटाते हैं

□

अब न दिल को सुकूं है न आराम है
ये वफ़ाओं का जां सोज़ इनाम है

उनके रुख़सारो गेसू हैं पेशेनज़र
क्या हसीं सुबह है क्या हसीं शाम है

हुस्न ने सबको बख़्शा है जोशे-जुनूं
इश्क़ तो बेसबब यारो बदनाम है

क्यों बहकने इज़्लाम देते हैं वो
रूप जिनका छलकता हुआ जाम है

फिर किसी पर तबस्सुम की बिजली गिरी
ऐ 'मयंक' हर तरफ़ एक कोहराम है

मेरे चेहरे पर जो ज़ाहिर, उभरी हुई सी लकीरें हैं
वो सब एहसास की मेरे धुंधली-सी तहरीरें हैं
इन्सां उलझा है उलझन में, उलझन में ही जीता है
उसके आगे खुशियों की कुछ फीकी-सी तसवीरें हैं

कोई खुशियों में डूबा है, कोई ग़म से चूर यहां
एक विधाता ने लिखी क्यों दोरंगी तसवीरें हैं
उलझे गेसू, रूखे आरिज़, सूखे लब, जलती आंखें
हिज्र की शब हम पर जो गुज़री, उसकी ये तस्वीरें हैं

दिल दोनों के एक हैं लेकिन फिर भी मिलना मुश्किल है
देखो 'मयंक' अब पांव में अपने रस्मों की ज़ंजीरें हैं

□

प्रेम अगर पाना है यारो, ढूंढो उसको प्यासों में
नहीं योग में, नहीं भोग में, नहीं मिले वनवासों में
आओ मिलन की बेला है हम मिलकर प्रेम की बात करें
क्या रखा है इन झरनों में, क्या रखा मधुमासों में
आंखों देखी कानों सुनी भी बात ग़लत हो सकती है
क्यूं विश्वास जमाए बैठा है तू इन विश्वासों में
वो तो इन्सानों के दिल में करता है दिन रात विश्वास
जिसको ढूंढ़ रही है दुनियां धरती और आकाशों में
जिनको दुनियां भर पै हुकूमत करने की इक धुन थी 'मयंक'
आज हमें वो लोग नज़र आते हैं बस इतिहासों में

अपनी क़िसमत का लिखा किसको दिखाएं यारो
दिल के हालात यहां किसको सुनाएं यारो
ज़ख्म देकर हमें कहते हैं कि खामोश रहो
दिल के ये ज़ख्म कहां जाके छिपाएं यारो
वो हमें भूल गए, इसका गिला क्या उनसे
भूलने वाले को हम कैसे भुलाएं यारो
हमने उम्मीद लगाई है यही मुद्दत से
काश वो हमको सदा देके बुलाएं यारो
इश्क़ सब कुछ नहीं, कुछ और भी है दुनियां में
ऐसे हालात से हम कैसे निभाएं यारो
उनकी तसवीर तो इस दिल में है पिनहा लेकिन
चीरकर दिल उन्हें हम कैसे दिखाएं यारो
लोग देखेंगे कि निकला है घटाओं से 'मयंक'
ज़ुल्फ़ जब जब भी वो चेहरे से हटाएं यारो

□

चलन खुलूसो-वफ़ा का जो आम हो जाए
खुदा गवाह है दुश्मन भी राम हो जाए
वो आ गए हैं तो मैं अपनी जां फिदा कर लूं
इलाही आज सवेरा भी शाम हो जाए
भला उसे भी कोई मुंह लगाएगा साक़ी
जो मयगुसार के रुसवा-ए-जाम हो जाए
वो रिन्द हूं जो कभी देख लूं चमन की तरफ़
तो फूल बाद-ए- शबनम का जाम हो जाए
नमाज़े इश्क़ की मेराज तो यही है 'मयंक'
कि मेहवियत में जहां का इमाम हो जाए

ज़माने भर में कोई भी अगर ग़मख्वार हो जाता
तो मेरे हाले दिल का कुछ-न-कुछ इज़हार हो जाता
मैं अपनी ज़िन्दगी क़ुरबान कर देता मुहब्बत में
इशारा तेरी आंखों का अगर इकबार हो जाता
खुदा भी गर मदद करता कमाले नाख़ुदाई की
सफ़ीना मौजे तूफ़ां से उभर कर पार हो जाता
अगर मालूम हो जाता कि हमदर्दी है बेदर्दी
तो उनकी मीठी बातों से ज़रा हुशियार हो जाता
जो मुश्किल थी 'मयंक' आसान हो जाती है मेरे हक़ में
अगर मरने से पहले आपका दीदार हो जाता

□

जर्फ़ साक़ी का आज़माना है
आज मौसम बड़ा सुहाना है
जिनको फ़ुरसत नहीं है सुनने की
हाले दिल उनको ही सुनाना है
वादा करके जो भूल जाते हैं
हमको उनसे ही तो निभाना है
जो हमारे नहीं हुए अब तक
उनको अपना हमें बनाना है
उनकी फ़ुर्क़त में ऐ 'मयंक' तुम्हें
गीत लिख लिख के गुनगुनाना है

हुस्न जब इश्क़ की तसवीर बनेगा यारो
ख़्वाब ही ख़्वाब की ताबीर बनेगा यारो

रस्मे दुनिया का कोई ख़ौफ नहीं है मुझको
मेरा साक़ी मेरी तशहीर बनेगा यारो

आंख से आंख मिले, और कोई बात बने
वो ही पल प्यार की तक़दीर बनेगा यारो

हर ख़मो पेंच तो बस उनकी ही जुल्फों का सुनो
इश्क़ में आहनी ज़ंजीर बनेगा यारो

क्या खबर थी के 'मयंक' आपका हर शेअर यहां
हासिदों के लिए इक तीर बनेगा यारो

□

जब तुम्हारे साथ थे, वो रात भी क्या रात थी
दिल में कुछ जज़्बात थे वो रात भी क्या रात थी

तुम मिले तो यूं लगा जैसे ख़ुदाई मिल गई
हाथ में जब हाथ थे, वो रात भी क्या रात थी

तुम भी गाते थे हमारे साथ नग़मे प्यार के
हर तरफ़ नग़मात थे, वो रात भी क्या रात थी

दिन भी अपने थे यहां, रातें भी अपनी थीं सनम
पुरसुकूं हालात थे वो रात भी क्या रात थी

ऐसा लगता था सितारों में 'मयंक' अपना वजूद
साथ इक बारात थी, वो रात भी क्या रात थी

क्या हमारा मकसद है और कहां पे जाते हैं
और अपने दिल पर हम क्यूं यक़ीं न लाते हैं

काम ऐसा क्योंकर हम कर रहे हैं यारो
पास रह रह के भी खुद दूर दूर जाते हैं

इसमें क्या ताअज्जुब है, चांद पर कोई पहुंचा
आप अपने से खुद ही दूर दूर जाते हैं

क्या है फ़लसफा यारो ऐसी ज़िंदगानी का
जिसकी खोज में खुद ही आज खोए जाते हैं

तुझको क्यूं नहीं ढूंढें ऐ 'मयंक' ये तारे
तेरी ही बदौलत तो रौशनी ये पाते हैं

हुस्न रूहे रवां तलाश करें
बंदा परवर कहां तलाश करें

आओ तामीरे आशियां के लिए
चर्ख़ पर बिजलियां तलाश करें

आओ ख़ुशियों की तेज़ धूप में हम
ग़म की परछाइयां तलाश करें

हो न तफ़रीके रंगो नस्त यहां
ऐसा ऐसा जहां तलाश करें

हुस्न की एक शगुफ्तगी को 'मयंक'
गुलसितां गुलसितां तलाश करें

जो उनका नज़ारा करते हैं
आहों में गुज़ारा करते हैं

गुलशन ही नहीं सेहरा में भी
तेरा ही नज़ारा करते हैं

इक तेरी खातिर जाने अदा
क्या क्या न गवारा करते हैं

ऐ भूलने वाले हम तुमको
हर वक़्त पुकारा करते हैं

क़ाबू में रखें दिल कैसे 'मयंक'
वो रोज़ इशारा करते हैं

ग़मों में सीख ले तू मुस्कराना
सफ़र हो जाएगा तेरा सुहाना

न देगा साथ कोई इस जहां में
किसी को भी न हाले ग़म सुनाना

वफ़ादारों में तेरा नाम होगा
ज़रा तू सीख ले वादा निभाना

जो सच्ची बात है सच ही रहेगी
बहानों को पड़ेगा मुंह छुपाना

'मयंक' अपना ज़मीं पर कौन होगा
फ़लक में ढूंढ़ लो अपना ठिकाना

फिर किसी को न होश होता है
जब वो जल्वा फ़रोश होता है

लोग खुद साथ साथ चलते हैं
जब तबियत में जोश होता है

मेरे इज़हारे इश्क़ पर यारो
क्यों ज़माने में रोश होता है

हुस्न होता जब ख़ामोश कभी
सारा आलम ख़ामोश होता है

ऐ 'मयंक' आज फ़िर फिदा उन पर
कोई ख़ाना बदोश होता है

देखिए वो आ गए वो आ गए
क़ैफ बन कर रूहो दिल पर छा गए

टूट कर गिरते सितारे भी हमें
ज़िंदा रहने की अदा सिखला गए

एक नग़मा सा फ़िज़ा में घुल गया
वो लबों से क्या तरन्नुम गा गए

आज शर्मिन्दा हुआ है ऐ 'मयंक'
दोस्त मुझको आइना दिखला गए

सैकड़ों में एक दो होंगे कोई
जो मुरादें अपने दिल की पा गए

जिसको भी तेरा प्यार मिल जाए
उसको हरसू बहार मिल जाए
तू जो इक बार देख ले हंस कर
मेरे दिल को क़रार मिल जाए

तुम जो आंखों में डाल लो काजल
जब भी चाहो शिकार मिल जाए

अपने मरने पै हम भी खुश होंगे
गर कोई सोगवार मिल जाए

अपनी मर्ज़ी से हमको मरने का
ऐ खुदा अख्तियार मिल आए

काश मिल जाए वो 'मयंक' मुझे
लज़्ज़ते इन्तिज़ार मिल जाए

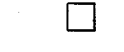

झूठ का दुनिया में ऊंचा नाम है
सच यहां सौ तरह से बदनाम है

था कभी जो रौशनी का मुन्तज़िर
अब अंधेरों में वही गुमनाम है

तोड़ दे राधा ये बन्धन लाज के
आज तेरे सामने घनश्याम है

नाम जो अपने वतन को दे गया
इस वतन में आज वो बदनाम है

प्यार में कब चैन मिल पाता 'मयंक'
आशिकों को कब यहां आराम है

ग़मों के साए में जीकर यही तो हमने जाना है
जहां में ज़िंदगानी मौत का ही इक बहाना है
मक़ामे ज़िंदगानी को समझ पाया नहीं कोई
कहां पर ये मिलेगी और कहां इसका ठिकाना है
ग़मों को ढालकर खुशियों के सांचे में अगर जी लो
कि अब रंजो अलम की भीड़ में भी मुस्कराना है
हज़ारों तोहमतें लेनी पड़ेंगी अपने सर हमको
मुहब्बत का हमेशा ही से दुश्मन ये ज़माना है
नहीं है अब अलावा मौत के इसका कोई साथी
'मयंक' आशिक है इक नाकाम जो ग़म का निशाना है

कुछ रिश्ते दुख के होते हैं जिनसे आराम नहीं होता
कुछ रिश्ते नाम के होते हैं और कुछ का नाम नहीं होता
होती है बुरों के रहने से अच्छों की भी इज़्ज़त दुनिया में
तुम कैसे नाम कमा लेते जो वो बदनाम नहीं होता
शोहरत को इल्लत जानते हैं, रहते हैं सदा गुमनामी में
शोहरत की तमन्ना जिसको हो, वो तो गुमनाम नहीं होता
मेहनत से जो जान चराते हैं, वो लोग सदा पछताते हैं
कोशिश ये जो भी करता है, वो तो नाकाम नहीं होता
इस शख़्स पै ये दुनिया अक्सर इल्ज़ाम लगाती आई 'मयंक'
वो शख़्स फरिश्ता होता है जिसपै इल्ज़ाम नहीं होता

आप आ जाएं तो फिर रात हसीं आ जाए
और तसकीन की सौग़ात हसीं आ जाए

ज़िन्दगी में मुझे कुछ और मिले या न मिले
काश इक वक़्त की वो रात हसीं आ जाए

जिसकी यादों से झुलसते हैं मेरे कल्बो जिगर
काश इक बार वो बरसात हसीं आ जाए

जो फ़साने हुए मंसूब मेरे नाम के साथ
उन फ़सानों में तेरी बात हसीं आ जाए

मैं भी तूफानों का रुख मोड़ दूं इक पल में 'मयंक'
हाथ में मेरे जो वो हाथ हसीं आ जाए

□

बन जाए बनाने से वो तदबीर चाहिए
जब चाहो बदल जाए वो तक़दीर चाहिए

सूरत वो नहीं चाहिए तरसे जिसे आंखें
बस जाए जो नज़रों में वो तसवीर चाहिए

मिल जाएगा बिछुड़ा हुआ साथी भी एक दिन
ऐ दोस्त बस दुआओं में तासीर चाहिए

दीवान-ए-उलफत को जकड़ने के लिए अब
ज़ंजीर नहीं जुल्फ़ो गिरहेगीर चाहिए

बैठे हैं निशाने पै यूंही आके 'मयंक' हम
दिल में जो उतर जाए वही तीर चाहिए

तुझको दिल में बसाएंगे यारां
अब तो कुछ कर दिखाएंगे यारां

वादा करके भी तुम न आए अगर
शिकवा लब पर न लाएंगे यारां

होके रुसवाइयों से बेपरवाह
प्यार के नग़मे गाएंगे यारां

जानो दिल लेके हम भी नज़राना
तेरी गलियों में आएंगे यारां

तुझसे गर मिल नहीं सका जो 'मयंक'
ग़म के आंसू बहाएंगे यारां

गुज़रती है जो वो बताई न जाए
तेरी याद दिल से भुलाई न जाए

मोहब्बत में अपनी जो हालत हुई है
किसी को वो ए दिल बताई न जाए

है दामन शिकस्ता तो तलवों में कांटे
जुनूं की ये हालत दिखाई न जाए

ये तस्वीरे जानां जो दिल में बसी है
तसव्वुर से अब तो हटाई न जाए

मोहब्बत हमारी जो ज़ाहिर हुई है
'मयंक' अब छपाए छुपाई न जाए

दिलमें जब उनकी याद आती है
आंखों आंखों में रात जाती है
चांद अपनी डगर पै जाता है
चांदनी दिल मेरा जलाती है
चांद तारों की मरमरीं शब में
शम्अे उम्मीद झिलमिलाती है
ऐ हवाओ मुझे बता दो ज़रा
राह जो उनके घर को जाती है
चलते रहना है ए 'मयंक' तुझे
जिन्दगी बस यही सिखाती है

□

हम तेरे इश्क़ में हस्ती से गुज़र जाएंगे
मौत की राह नहीं देखेंगे मर जाएंगे
काफ़िले वाले समझ लेंगे कि मंज़िल है यही
हम जो ऐ दिल कहीं रस्ते में ठहर जाएंगे
हम फ़ना होके भी कदमों में रहेंगे तेरे
खाक़ बनकर तेरी राहों में बिखर जाएंग
मेरी तक़दीर की तसवीर बदल जाएगी
उनके बिखरे हुए गेसू जो संवर जाएंगे
बस यही फ़िक्र शबो रोज़ सताती है 'मयंक'
उनके दर से जो उठेंगे तो किधर जाएंगे

कुछ लोग राहे इश्क़ में ऐसे गुज़र गए
ले ले के तेरे नाम को दुनिया में मर गए

रातें मिलन की आज भी कुछ हमको याद हैं
वो साथ जीने मरने के वादे किधर गए

जो चल दिये थे राह में तुम साथ छोड़कर
तब से हवासो होश भी जाने किधर गए

गुज़रोगे तुम इधर से किसी दिन यक़ीन था
तो ख़ाक बनके राहों में तेरी बिखर गए

उनका पता न पाया 'मयंक' आज तक कहीं
यूं ढूंढ़ते ही ढूंढ़ते शामो-सहर गए

क्यों हैं ये बदले हुए हालात कुछ फ़रमाइए
हो गई क्या ख़ास कोई बात कुछ फ़रमाइए

बिगड़े तेवर, सुर्ख आरिज़ कह रहे हैं दास्तां
और क्यों भड़के हैं ये जज़बात कुछ फ़रमाइए

क्या किसी जाने ग़ज़ल की याद ने अंगड़ाई ली
आज अश्कों की है क्यूं बरसात कुछ फ़रमाइए

वस्ल की शब आप क्यों ख़ामोश ही बैठे रहे
क्यूं न होने पाई कोई बात कुछ फ़रमाइए

मैं भी चुप हूं आप भी ख़ामोश साकित हैं 'मयंक'
किस तरह होगी बसर ये रात कुछ फ़रमाइए

गुलचीं की शरारत है या बर्क़ की साज़िश है
क्यूं आज सरे गुलशन शोलों की नुमाइश है

आसूद-ए-ग़म मुझसा हो और कोई क्यों कर
कुछ चर्ख़ की है मुझ पर, कुछ उनकी नवाज़िश है

तुमने तो सरे मेहफिल दिल तोड़ दिया मेरा
ये तर्ज़े सितम है या, अन्दाज़े सताइश है

इस दौर-ए-कशमकश में क्या ज़िक्र मसर्रत का
आहों पै है पाबंदी, नालों पै भी बंदिश है

ये दिल है कि ज़ख़्मों का महका हुआ इक गुलशन
सीने में 'मयंक' अपने फूलों की नुमाइश है

सबा जो कूंच-ए-जाना से खुशगवार आई
खिजां का दौर चमन से गया बहार आई

अजीब बात है जाती है फिर वहीं दुनियां
हज़ार बार जहां से ज़लीलो-ख्वार आई

कली से छेड़ इधर और उधर गुलों से मज़ाक़
बिखेरती हुई क्या शोखियां बहार आई

मेरी निगाह जो बेनूर हो गई है तो क्या
किसी की जलवा गहे नाज़ तो संवार आई

कभी तो चाक गिरीबां हुआ कभी दामन
बहार कबसे 'मयंक' हमको साज़गार आई

रविश कलियों की फूलों का चलन अच्छा नहीं लगता
न जाने क्यूं हमें अब ये चमन अच्छा नहीं लगता

सज़ा देने का अब कोई नया अंदाज अपनाओ
कि ये हंगाम-ए-दारो रसन अच्छा नहीं लगता

कोई पुरजोश नग़मा छेड़ ऐ दिल साज़े हस्ती पर
मुसलसल ये सुकूने अन्जुमन अच्छा नहीं लगता

ये ऐसा ज़हर फैला चारसू फ़िरक़ा परस्ती का
कि अब इक हमवतन को हमवतन अच्छा नहीं लगता

'मयंक' एहले जहां को जो न दर्से ज़िन्दगी बख्शे
मुझे खुद ऐसा अंदाज़े-सुखन अच्छा नहीं लगता

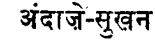

दैरो काबा में न वो मेहफिले गुलफ़ाम में है
मेरे हर दर्द का दरमां तो भरे जाम में है

गोकि दिल क़ैद तेरी ज़ुल्फे-सियाह फ़ाम में है
फिर भी यूं शाद है जैसे बड़े आराम में है

मस्त है जामो सुबू, झूम रहा है साक़ी
किस क़दर तेज़ियां मस्ती मये गुलफ़ाम में है

ढूंढ़ने वालो न ढूंढ़ो मुझे आगाज़ में तुम
ज़िक्र मेरा मेरे अफसाने के अंजाम में है

मेरे पीने के लिए अर्श से आई है 'मयंक'
ये जो कुछ आतिशे सय्याल मेरे जाम में है

ये कैसा आज दौरे आसमां है
जो कल था मेहरबां ना मेहरबां है

न छेड़ ऐ बाग़वां ज़िकरे बहारां
गुलों पै शाने-रानाई कहां है

खिजां बावे चमन तक आई क्यूँ कर
ये किन हाथों से नज़्मे गुलसितां है

समझ लें बुलबुलें अंजाम गफ़लत
कि अब ज़द पर इन्हीं का आशियां है

ज़माना फूल चुनता जाए लेकिन
'मयंक' साकित ज़बाने बागबां है

ऐ दिल नादान कोई ग़म न कर
गुज़री बातें भूल जा मातम न कर

एक दिन मंज़िल क़रीब आ जाएगी
हौसलों को अपने राही कम न कर

दिल को लेकर दर्दे दिल मुझको न दे
दोस्ती में दुश्मनी हमदम न कर

उनको मंज़िल मिल गई अच्छा हुआ
अपने गुम होने का कोई ग़म न कर

आशिक़ी पर हर्फ़ आएगा 'मयंक'
इस तरह तू शिकव-ए-पयहम न कर

दिले बेताब सम्हल जाए तो कुछ बात बने
किसी सूरत ये बहल जाए तो कुछ बात बने

मेरे किरदार पै गुफ़्तार का खंजर न चला
सर पै आई टल जाए तो कुछ बात बने

रस्मे उलफ़त का चलन खत्म हुआ जाता है
ये इरादा जो बदल जाए तो कुछ बात बने

काश वो मेरी वफ़ाओं पै यकीं ले आएं
उनका दिल दिल से बदल जाए तो कुछ बात बने

उनके चेहरे पै हैं जुल्फों की घटाएं जो 'मयंक'
चांद बदली से निकल जाए तो कुछ बात बने

मेरी वफ़ा पै खुदा के लिए यकीं लाओ
नज़र बदल के मेरे प्यार को न ठुकराओ

तमाम उम्र तड़पते रहे तुम्हारे लिए
वफ़ा का वास्ता देते हैं अब चले आओ

नहीं है प्यार में रस्मो रिवाज की परवा
तमाम रस्म जमाने की तोड़ कर आओ

शराबे दीद की लज़्ज़त से मैं हूं ना वाकिफ़
उठा के परद-ए-रुख़ मेरे रूबरू आओ

मिटाना चाहते हो तुम ग़म की तीरगी को अगर
'मयंक' चांदनी बन कर जहां पै छा जाओ

अपनी चाहत का आसरा दे दो
अब तो दामन की कुछ हवा दे दो

जानेमन कुछ करो मसीहाई
दिले-बीमार को दवा दे दो

तुम मुझे एक बार मिल जाओ
चाहे फिर मौत की दुआ दे दो

तुम जफ़ाओं से बाज़ मत आओ
कुछ वफ़ाओं का तो सिला दे दो

इम्तेहां लो 'मयंक' का पहले
शौक़ से फिर कोई सज़ा दे दो

अश्क़ आंखों से ढल रहे होंगे
दिल के अरमां मचल रहे होंगे

नींद आंखों से उड़ गई होगी
करवटें वो बदल रहे होंगे

रात वो जाग कर गुज़ारेंगे
चांदनी में टहल रहे होंगे

दर्दे फ़ुरक़त से होके बेक़ाबू
खुद ब खुद ही सम्हल रहे होंगे

देंगे दामन की ए 'मयंक' हवा
ज़ख्म अब दिल के जल रहे होंगे

गज़ब ये है कि तेरा एतबार करते हैं
तमाम रात तेरा इंतज़ार करते हैं

ज़माना हम से ये कहता है ना समझ हैं हम
तुम्हारे वास्ते दिल बेक़रार करते हैं

कभी उम्मीद से दिल को क़रार आता है
खुशी से आंख कभी अश्कबार करते हैं

शबे फ़िराक़ की तनहाइयों से घबड़ा कर
हसीन चांद को हम राज़दार करते हैं

तुम्हारे फूल से चेहरे की आरज़ू लेकर
'मयंक' दौरे खिजां को बहार करते हैं

जो थी सुकून बख्श वो राहत कहां गई
थी मक्सदे हयात वो चाहत कहां गई

दौरे शबाब में नज़र आता है अब हिजाब
नाज़ो अदा के साथ शरारत कहां गई

अब क्यूं नहीं सताता है आकर खयाले यार
जोशे जुनूं में जो थी वो हालत कहां गई

कल तक किसी का नाम था ओठों पै रातदिन
सोचो 'मयंक' आज वो आदत कहां गई

खंजर है आज दस्ते हिनाई में किस लिए
वो शर्म क्या हुई वो नज़ाक़त कहां गई

ज़िंदगी यूं गुज़ारते हैं हम

बिगड़ी क़िस्मत संवारते हैं हम
वक्त जो उनके साथ गुज़रा है
उसको दिल में उतारते हैं हम
फूल को अपने सामने रख कर
रूप उसका निहारते हैं हम
अंजुमन अंजुमन खुदा की कसम
इक तुझी को पुकारते हैं हम
ऐ 'मयंक' इश्क़ में किसी के लिए
जीती बाज़ी को हारते हैं हम

इन बहारों में दिल नहीं लगता
लाला ज़ारों में दिल नहीं लगता
दिल की शिद्दत बढ़ी है इस दरजा
ग़म गुसारों में दिल नहीं लगता
जाने क्या बात है शबे-फुरक़त
चांद तारों में दिल नहीं लगता
मयक़दे में तो आ गए हैं मगर
मय गुसारों में दिल नहीं लगता
जब से तनहाई रास आई 'मयंक'
तो हज़ारों में दिल नहीं लगता

वफ़ा की राह में हस्ती मिटाए बैठे हैं
जुनूं की हद है कि खुद को भुलाऐ बैठे हैं
तुम्हारी राह की तारीकियां मिटाने को
मिसाले शमआ दिल अपना जलाए बैठे हैं
अजब निगाहों से देखा है मुझको महफिल में
नज़र मिला के मेरा दिल चुराए बैठे हैं
जफ़ा परस्त से क्यूं कर वफ़ा की हो उम्मीद
वफाए-शोख तेरी आज़माए बैठे हैं
हमें जहां के गमों की नहीं ज़रा फुर्सत
ग़मे हयात को दिल से लगाए बैठे हैं
'मयंक' अब कोई हमको न दे फ़रेबे-वफ़ा
फ़रेब सैकड़ों उल्फ़त में खाए बैठे हैं

□

उदास-उदास सा खुद को पा रहा हूं मैं
न जाने कौन से सदमे उठा रहा हूं मैं
बिछुड़ के तुमसे ये महसूस हो रहा है मुझे
कि अपनी लाश को खुद ही उठा रहा हूं मैं
न दिन को चैन मयस्सर न रात को है क़रार
तुम्हारी याद में हस्ती मिटा रहा हूं मैं
तुम्हारे वादे पै करता हूं एतबार अब तक
हनोज़ रस्मे वफ़ा को निभा रहा हूं मैं
कहो ये गर्दिशे दौरां से दो घड़ी ठहरे
'मयंक' उनको तसव्वुर में ला रहा हूं मैं

किसे हम ज़िंदगी कहते हैं ये तुमको बताएंगे
तअर्रुफ़ ज़िंदगानी का तो दीवाने कराएंगे

हमारे दिल पै क्या गुज़रेगी हम ये कह नहीं सकते
हमें वादा निभाना है तो हम वादा निभाएंगे

यक़ीनन एक दिन मंज़िल हमें मिल जाएगी यारो
वफ़ा की राह पर चलना है तो चलते ही जाएंगे

तेरी गलियों के लोगों ने कहा है हमको दीवाना
तेरी गलियों में आएंगे वफ़ा के गीत गाएंगे

बहुत खुद्दार हैं हम हंस के सह लेंगे हर इक ग़म को
'मयंक' अपनी मुहब्बत पै न अब आंसू बहाएंगे

कभी शादमानी कभी ग़म मिले हैं
मुहब्बत में हरदम यही सिलसिले हैं

चलो आओ सैरे चमन को किसी दिन
गुलसितां महकता है और गुल खिले हैं

ज़माना सितम पै सितम ढा रहा है
मगर देख लीजे मेरे लब सिले हैं

क़यादत में मेरी जो निकले थे घर से
बहुत दूर मुझसे वही क़ाफ़िले हैं

घुटन, दर्द, आंसू, तड़प, इज़्तिराबी,
'मयंक' अब वफ़ाओं के ये ही सिले हैं

मेरी हयात में उल्फ़त के रंग भरता है
ये कौन आज मेरी राह से गुज़रता है

उसी को कहते हैं अकसीर ये जहां वाले
जो ख़ाक बनके तेरी राह में बिखरता है

तेरे फ़िराक़ में जब अश्क हम बहाते हैं
हरेक अश्क में साया तेरा उभरता है

अजीब धूम है बज़्मे जहां में चारों तरफ़
वो आ रहे हैं तो हर आश्ना संवरता है

'मयंक' ऐसा भी इक शख़्स हमने देखा है
वफ़ा का नाम भी लेते हुए जो डरता है

जिंदगी क्यूं हुई वक्फ़े ग़मों-आलाम न पूछ
मुझसे ऐ दोस्त मेरे इश्क़ का अंजाम न पूछ

कौन है किसने बना रखा है दीवाना मुझे
हम नशीं अक़्ल से पहचान मगर नाम न पूछ

उसकी नाक़ाम तमन्ना को समझ ऐ सैयाद
मुर्ग़े दिल आ गया क्यूं खुद ही तहेदाम न पूछ

होके महरूम तेरे लुत्फ़े करम से ऐ दोस्त
किस तरह मैंने गुज़ारे सहरो-शाम न पूछ

इश्क़े खुद्दार की अज़मत को समझ आज 'मयंक'
बेनकाब आ गया क्यों कोई लबे बाम न पूछ

ज़ख्मे दिल को क्यों नहीं आख़िर नमकदां की तलाश
दर्द के पहलू किया करते हैं दरमां की तलाश

नाख़ुदा तुझको मुबारक हो ये माहौले सुकूं
मेरी कश्ती को रहा करती है तूफां की तलाश

फिर बहारों ने परस्तारे जुनूं की छेड़ की
फिर मेरी वहशत को है सेहने गुलिस्तां की तलाश

ऐ ख़ुदा फिर कोई पैदा हो सदाक़त का अमीं
एक मुद्दत से निगाहों को है इंसां की तलाश

ज़ख्मे दिल ज़ख्मे जिगर से क्या ग़रज़ उनको 'मयंक'
उनके हर तीरे नज़र को है रगेजां की तलाश

पत्थर को गौहर दश्त को घर हमने बनाया
हर ऐब को हमरंगे हुनर हमने बनाया

जब आतिशे गुल से न बनी बात चमन में
हर कतरए शबनम को शरर हमने बनाया

ऐ हुस्ने सरापा-ए-अज़ल हमको दुआ दे
जलवा तेरा मंज़ूरे नजर हमने बनाया

आराइशे गुलशन में लहू अपना बनाकर
हर फूल को फ़िरदोसे नज़र हमने बनाया

देखे कोई ये हुस्ने मसावात हमारा
जर्रों को 'मयंक' आज क़मर हमने बनाया

राह के पत्थर को ठोकर से हटा देते हैं हम
जब कोई हद से गुज़रता है सज़ा देते हैं हम

तंग आकर मौत को भी ख़ुदकशी करनी पड़ी
देख अब हालात ही ऐसे बना देते हैं हम

ऐ सितमपरवर इसी में है अगर तेरी ख़ुशी
ले तेरे कदमों पे सर अपना झुका देते हैं हम

आंख में आंसू हैं लेकिन ऐ अनीसे ज़िन्दगी
तेरा दिल रखने की खातिर मुस्कुरा देते हैं हम

रश्क से तकते हैं हमको सब फरिश्ते ऐ 'मयंक'
जब खुलूसे दिल से दुश्मन को दुआ देते हैं हम

किसी ज़र्रे को फ़ख्रे कायनाते दिल नहीं समझा
सदफ़ परवर गौहर ने राज़े आगे गिल नहीं समझा

वो राही रास्ता भूला कि जिसकी ख़ुदफ़रेबी ने
तेरे नक़्शे क़दम को रहबरे मंज़िल नहीं समझा

निगाहें गैर से क्यों मिल रही हैं इस तवज्जो से
मुझे क्यों इल्तफ़ाते ख़ास के क़ाबिल नहीं समझा

डुबो कर मैंने कश्ती, आबरू रख ली है तूफां की
वगरना कब भंवर को दामने-साहिल नहीं समझा

हुनर को भी 'मयंक' उनकी नजर ने ऐब ही जाना
मगर मैंने कभी उनको हरीफ़े दिल नहीं समझा

हुस्ने मासूम पर जब शबाब आ गया
हर अदा जैसे तौबा शिकन बन गई
चांद से रुख पै गेसू मचलने लगे
कुफ़रो ईमान के दरमियां ठन गई

आप तो चल दिए मुस्कराते हुए
खिरमने दिल पै बिजली गिराते हुए
ये तो माना कि ये एक अदा थी मगर
मैंने सोचा मेरी जान पर बन गई

आपकी याद से मैं नहीं बेखबर
आप ही तसव्वुर में शामो-सहर
आपकी आरजू आपकी जुस्तजू
जिन्दगी का मेरी एक जुज़ बन गई

वो शबे वादा आ तो गए हैं मगर
कुछ खफ़ा हो गए अर्ज़े अहवाल पर
और फिर हंस दिए जाने क्या सोचकर
बात बिगड़ी हुई थी मगर बन गई

चार तिनकों के जलने का कुछ गम न कर
इस चरागां को जश्ने बहारां समझ
लब पै आया अगर बिजलियों का गिला
ए 'मयंक' आबरु-ए-नशेमन गई

क्या मिलेगा उसे काबे में चले जाने से
लौ लगा रखी है ज़ाहिद ने सनमखाने से
हम असीराने क़फ़स खुश हैं क़फ़स में लेकिन
बाज़ आता नहीं सैयाद सितम ढाने से
तर्के उल्फ़त से कभी कम नहीं होती उल्फ़त
रूह मरती नहीं इंसान के मर जाने से
इश्क़ काफ़िर है कि मोमिन ये न सोचा यारो
और उलझ जायेगा ये मसअला सुलझाने से
एहले दिल खूब समझते हैं ये बातें ऐ 'मयंक'
शम्म क्यों मिलके गले रोई है परवाने से

□

आजकल है वो मुझसे खफ़ा क्या करूँ
कोई ताज़ा वफ़ा या खता क्या करूँ
आप अगर चारासाज़ी न फरमा सके
दर्दे दिल लादंग है दवा क्या करूँ
आपके हर इशारे पै हूं सरनिगूं
आप ही कहिए इसके सिवा क्या करूँ
वो शबे वादा आ तो गए हैं मगर
दरमियां आ गई है हया क्या करूँ
इश्क़ में दिल दिया, ग़म लिया, जान दी
ए 'मयंक' और इसके सिवा क्या करूँ

किसके घर जाएं कि अरबाबे करम को भूलें
कौनसी बात को दोहराएं तो ग़म को भूलें

जो बहर-गाम तेरे साथ रहें हैं बरसों
ग़ैर मुमकिन है तेरे नक़्शे क़दम को भूलें

इश्क़ में ख़ुद को भुलाना तो बहुत आसां है
भूल सकते हैं अगर आप तो हमको भूलें

जी में आता है कि हम आज तेरी आंखों से
इतनी पी जाएं कि हर दर्दो-अलम को भूलें

इश्क ने बख़्शा है ज़ख़्मों का लिबास हमको 'मयंक'
किस तरह इश्क़ की इस शाने करम को भूलें

नर्गिसी आंखों ने तेरी काम कैसा कर दिया
सूरते गुल दिल का हर इक ज़ख़्म ताज़ा कर दिया

तर्क जब मैंने शिकायत का इरादा कर दिया
ख़ामशी ने बढ़के इज़हारे तमन्ना कर दिया

ढूंढ़ता हूं मैं उसी को अंजुमन दर अंजुमन
जिसने दिल लेकर मुझे दुनियां में तनहा कर दिया

इश्क़ ही था वो कि जिसने अपनी जां पै खेलकर
आतिशे नमरूद के शोलो को ठंडा कर दिया

ज़िन्दगी गुलज़ार करने के लिए हमने 'मयंक'
कतर-ए-शबनम को बुसअत देके दरिया कर दिया

दिल का हर दाग़ अलावों की तरह रोशन है
फिर भी अधरों पै हर इक सिम्त वही जीवन है
हमने तय कर ही लिया जाद-ए-हस्ती का सफ़र
लोग कहते रहे हर मोड़ पै इक रहज़न है
रात मेहताब वक़्फ़ है तो सहर शम्स वक़्फ़
अंधे कुएं की तरह फिर भी मेरा जीवन है
लम्हा भर को भी नहीं होता है सीने से जुदा
ग़ैर के दर्द में भी किस कदर अपनापन है
मुझको अब और न दे ज़ख्मे मुहब्बत या रब
अश्के ख़ूं से ये अभी सुर्ख़ मेरा दामन है
सखसर खाक हुआ जाता है अब मेरा वजूद
जिस्म में ख़ून है या पिघला हुआ आहन है
सामने किसके कहूं राज़े-ग़मे-दिल-ए-'मयंक'
मेरा साया भी मेरा दोस्त नहीं दुश्मन है

□

है सर पे खाक़ तो पावों लहू-लहू देखो
मेरी तलाश मेरा ज़ोक़े जुस्तजू देखो
तुम्हारे आने से गुलशन महक-महक उठा
चमन में आज तमाशा-ए-रंगो बू देखो
नज़र-नज़र में जिगर चाक कर दिया तुमने
हमारी आंख से टपका है ये लहू देखो
पियो शराबे मोहब्बत निगाहे साक़ी से
कभी न भूल के तुम जानिबे सुबू देखो
दिखाए थे जो कभी क़ैस ने ज़माने को
वही नज़ारे 'मयंक' आज हू-ब-हू देखो

झिझक कर मुंह छुपाएगा अंधेरा
यक़ीनन आएगा रौशन सवेरा

न मांगो तुम अंधेरों से पनाहें
बहुत नज़दीक है यारो सवेरा

ये दुनिया ख़ुद परस्तों से भरी है
यहां कोई न तेरा है न मेरा

संभल कर तू क़दम आगे बढ़ाना
है तेरी ताक में हर इक लुटेरा

रहेगा साथ में जो तू 'मयंक' के
तो देगी चांदनी भी साथ तेरा

□

सबा इधर से अगर बार-बार गुज़रेगी
तड़प-तड़प के शबे इन्तेज़ार गुज़रेगी

किसी ने लूट लिया है शबाब कलियों का
चमन से आज सबा बे-क़रार गुज़रेगी

जो बात दिल में है वो लब पे क्यूं नहीं लाते
ये बात हमको सदा नाग्वार गुज़रेगी

गुलों का क़ुर्ब मुबारक तुम्हें चमन वालो
क़फ़स में अपनी तो फ़सले बहार गुज़रेगी

'मयंक' मुझको यक़ीं है के उनकी उलफ़त में
मेरी हयात बशक्ले गुवार गुज़रेगी

आज मेरे दिल को अपने पास रहने दीजिये
कुछ-न-कुछ तो प्यार का एहसास रहने दीजिये

मैं तुम्हारे पास हूं और तुम हो मेरे दिल के पास
जब तलक मुमकिन हो ये एहसास रहने दीजिये

एक दिन खिच के मेरे पहलू में वो आ जाएंगे
कम-से-कम ये आस है तो आस रहने दीजिये

दिल हमारा आप को हम दे चुके हैं दिल रुबा
आप अपना दिल हमारे पास रहने दीजिये

झिलमिलाते मुस्कुराते ये सितारे ए 'मयंक'
आ गये हैं पास तो अब पास रहने दीजिये

मेरी आंखों में हैं आंसू रो रहा है मन मेरा
तक रहा है मुंह अजब अंदाज़ से सावन मेरा

मैं वो बर्बादे मोहब्बत हूं तुम्हारी राह में
बस मेरी पहचान है यारो फटा दामन मेरा

क्या बहारें भी उन्हीं के साथ रुख्सत हो गईं
आज सूना लग रहा है क्यूं मुझे गुलशन मेरा

तुम जो चाहो मुझको समझो या कहो कुछ ग़म नहीं
सूरते असली दिखाता है मुझे दर्पन मेरा

मैं जवां होकर हुआ रुस्वा-ए-आलम ए 'मयंक'
आज मुझको याद आता है बहुत बचपन मेरा

फ़राज़े माह पे जाना कोई मज़ाक़ नहीं
ये काम कर के दिखाना कोई मज़ाक़ नहीं

जमाले ग़म को छुपाना कोई मज़ाक़ नहीं
सहर को शाम बनाना कोई मज़ाक़ नहीं

मेरा वजूद मिटादो मगर ये याद रखो
लहू के दाग़ मिटाना कोई मज़ाक़ नहीं

जला के बैठा हूं अश्कों के दीप पलकों पर
ग़मों का जश्न मनाना कोई मज़ाक़ नहीं

मताए ज़ीस्त लुटा कर 'मयंक' उलफ़त में
शिकन जबीं पे न लाना कोई मज़ाक़ नहीं

बदले हुवे निज़ाम पे तेरी नज़र भी है
ए बाग़वां चमन की तुझे कुछ ख़बर भी है

मिज़राब छेड़ दो के करे रक्स ज़िंदगी
तारे नफ़स के पास ही तारे नज़र भी है

साज़िश बग़ैर क़ाफ़ला लुटना मुहाल था
इस ज़द में राहज़न ही नहीं राहबर भी है

हस्ते तलब उठाते ही जब मिल गई मुराद
महसूस ये हुआ के दुआ में असर भी है

अब ए 'मयंक' उसकी अता से गुरेज़ कर
ये सिर्फ चारा गर नहीं बेदाद गर भी है

रन्जो ग़म दर्दो अलम आहो फ़ुगा है ज़िंदगी
सैकड़ों उनवान की इक दास्तां है ज़िंदगी

जल रहे हैं ख़ारो ख़स उनका धुवां है ज़िंदगी
शाख़े गुल पर इक सुलगता आशियां है ज़िंदगी

देखिये तो इक हुबाबे मौजे दरिया भी नहीं
सोच ये तो एक बहरे बे करां है ज़िंदगी

फ़र्श-ए-गेती पर फरिश्तों ने भी हिम्मत हार दी
वो ग़मे दिल दोज़ वो बारे गिरां है ज़िंदगी

दर्दो कुलफ़त से न घबरा ए 'मयंक' इस दौर में
सब्रो इस्तकुलाल का इक इम्तेहां है ज़िंदगी

आइये हम भी बदल लें अपने अफ़साने का रुख
फिर गया है शम्म की जानिब से परवाने का रुख

देखना ये है के अब क्या गुल खिलाता है जुनूं
आज गुलशन की तरफ है एक दीवाने का रुख

देख कर उस शोख़ की आराईशें हुस्नो जमाल
रंग क्या-क्या ला रहा है आईना खाने का रुख

तू जो बे पर्दा कभी हो जाए ए मस्ते शबाब
कोई फ़रज़ाना करे फिर क्यूं न वीराने का रुख

जब नहीं पाया सुकूं दैरो हरम में ए 'मयंक'
हमने मजबूरन किया है आज मयखाने का रुख

कामयाबी न कामरानी है
कितनी बे फ़ैज़ ज़िन्दगानी है

सुनके पत्थर भी मोम हो जाते
वो मेरे प्यार की कहानी है

जिसमें जज़्बा नहीं हो मिटने का
वो जवानी भी क्या जवानी है

आप कहते हो मुझको दीवाना
आपकी ही तो मेहरबानी है

अब न कहना 'मयंक' को तनहा
रात खुद चांद की दीवानी है

□

अब तो उनसे निगाहें मिलाएंगे हम
गम नहीं चोट पर चोट खाएंगे हम

हम अंधेरों का शिकवा करेंगे न अब
ज़ख्म तनहाइयों में जलाएंगे हम

तुम हमें भूलने की जो कोशिश करो
तुमको हर हाल में याद आएंगे हम

उनके रुखसार से लेके कुछ रौशनी
आज बज़्मे-तमन्ना सजाएंगे हम

आज गुर्बत की तुम बात करना नहीं
दिल की मसनद पे तुमको बिठाएंगे हम

जल्वए-अर्श देखेंगे वो भी 'मयंक'
चांद की तरह जब मुस्कराएंगे हम

इस दुनिया की रस्म को हमने खूं अंगेज़ यहां देखा
भाई से भाई में ए यारो बस परहेज़ यहां देखा
क़ातिल डाकू और लुटेरे, नफ़रत अय्याशी के डेरे
आज के हर इंसां को हमने बस चंगेज़ यहां देखा
आग उगलता चांद भी देखा बर्फ़ीला सूरज भी देखा
दौरे जदीदी तौबा तौबा ग़म अंगेज़ यहां देखा
बदकारों के महल हैं ऊंचे सच्चे फांसी चढ़ते हैं
ज़ुल्मों की शमशीर को यारो, हमने तेज़ यहां देखा
दुनिया क्या है 'मयंक' बताओ आईना इसको दिखलाओ
नफ़रत के साग़र को हमने बस लबरेज़ यहां देखा

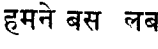

परबतों के पेड़ों पर शाम घिर आई है
मेरे साथ मौसम की आँख डुबडुबाई है
क्या हसीं नज़ारा है और समां भी प्यारा है
ऐसे में तू आ भी जा याद तेरी आई है
कैसे बात बन जाए कैसे काम हो जाए
मैं जो बे वफ़ा हूं तो वो भी हरजाई है
जिसको इक नज़र देखूं वो ही मेरा हो जाए
खुश नसीब हूं मैंने क़िसमत ऐसी पाई है
एक अदा 'मयंक' उनकी होश खो देती है
और जान लेवा वो उनकी अंगड़ाई है

उन्हें हमारी वफ़ाओं पे एतबार नहीं
मगर ये कैसे कहें हम के हमको प्यार नहीं

हनोज़ हम पे इनायत न हो सकी उनकी
हमारे जैसा जहां में गुनाहगार नहीं

खुशी के साथ अलम का अटूट रिश्ता है
खिजां को साथ न लाए तो वो बहार नहीं

गुल और ख़ार का है साथ चोली दामन का
जुदा गुलों से रहे ऐसा कोई खार नहीं

नज़र के तीर की ख्वाहिश है सबको दुनिया में
'मयंक' तीर वो क्या जो जिगर के पार नहीं

□

ऐसे आलम में भला होश कहां होता है
दिल में जब दर्द मोहब्बत का जवां होता है

लाख तुम पर्दा करो लब पे न लाओ लेकिन
रंग उलफ़त का तो चेहरे से अयां होता है

हद से बढ़कर कोई करता है जो इज़हारे वफ़ा
हमने देखा है वही दुश्मने जां होता है

बज़्म में तूने इस अंदाज़ से देखा मुझको
संग दिल जिससे मोहब्बत का गुमां होता है

आज हम राह 'मयंक' हों वो रहे उलफ़त में
दिल को सहरा में भी गुलशन का गुमां होता है

तीर नज़रों का किसी की दिल पे कुछ ऐसा लगा
दर्द दिल को आज मुझको जान से प्यारा लगा

याद ने आकर किसी की इस तरह घेरा मुझे
लाख बहलाया मगर फिर भी न दिल मेरा लगा

बे रुख़ी से क्यूं दिया अर्ज़े तमन्ना का जवाब
क्या तुम्हें यूं मेरे दिल को तोड़ना अच्छा लगा

उनका जलवा देखते ही हो गया दिल बाग़ बाग़
ज़ुल्फ़ सुंबुल सी लगी और फूल सा चेहरा लगा

आ गये हैं वो 'मयंक' जिस शब तसव्वुर में मेरे
हर तरफ़ फैला हुवा इक नूर का तड़का लगा

नज़र का तीर इस दिल पे चला के
चलें नाज़ो अदा से मुस्कुरा के

ख़बर क्या थी गिरा देंगे वो बिजली
अदाओं से ज़रा यूं मुस्कुरा के

दिया दम भर न तुमने चैन दिल को
ये अच्छी दिल्लगी की दिल लगा के

मुझे बरबाद करके जाने वाले
न जा यूं मेरी हस्ती को मिटा के

गंवादी जां 'मयंक' राहे वफ़ा में
थे ऐसे भी कई बंदे ख़ुदा के

खुद को इस राह से गुज़ारो तो
नाव तूफ़ां में तुम उतारो तो
ज़िंदगी खुद करीब आएगी
ज़िंदगी को कभी पुकारो तो
गीत का लुत्फ़ तुमको आएगा
अपना सब कुछ खुशी से हारो तो
फिर खुशी की न आरज़ू होगी
ग़म में इक बार दिल को मारो तो
जो तकल्लुफ करें तकल्लुम से
हो ही जाएगी बात धारो तो
परद-ए-ग़म में है खुशी पिनहां
ज़िंदगी यूं 'मयंक' गुज़ारो तो

□

रुख़ से पर्दा जो हटाओ तो कोई बात बने
आंख से आंख मिलाओ तो कोई बात बने
दूर रहने से कोई बात नहीं बनती है
पास मेरे ज़रा आओ तो कोई बात बने
नीची नजरें किये बैठे न रहो महफिल में
तीर नज़रों के चलाओ तो कोई बात बने
पूछ कर हाल हमारा कभी इक पल रुककर
दास्तां अपनी सुनाओ तो कोई बात बने
रोज़ तो यूं ही ख्यालों में चले आते हो
रुबरु भी कभी आओ तो कोई बात बने
आंखों ही आंखों में इकराह बनाकर दिलबर
दिल में जो 'मयंक' के समाओ तो कोई बात बने

दिल में जब यार की तस्वीर उतर जाती है
आंखों-ही-आंखों में फिर रात गुज़र जाती है
ज़िंदगी हंस के गुज़ारो तो कोई बात बने
यूं गुज़रने को तो रोकर भी गुज़र जाती है
गर्दिशे वक्त ने बरबाद किया है हम को
देखें अब ले के ये तक़दीर किधर जाती है
शौक-ए-दीदार ने रक्खा न कहीं का मुझ को
यूं दरो बाम में रह-रह के नज़र जाती है
ए 'मयंक' आते है मंज़िल के सलाम अक्सर ही
रहरवे शौक़ की जिस सिम्त नजर जाती है

आप से हमने की है मोहब्बत हुज़ूर
पास आओ न हम से रहो दूर-दूर
दिल की दुनिया तुम्हीं से फ़रोज़ां हुई
तुम हो दिल के सरूर और आंखों के नूर
जानता है ज़माना तुम्हारे हैं हम
एक दिन जान जाओगे तुम भी ज़रूर
उन को बख्शी मर्सरत भरी ज़िंदगी
जिन को आता नहीं ज़िंदगी का शऊर
खाक आए 'मयंक' दिल में तस्वीर-ए-यार
शीश-ए-दिल मेरा हो गया चूर-चूर

हज़रते मूसा ने ये कैसा तक़ाज़ा कर दिया
हसरते दीदार ने दुनिया में रुसवा कर दिया

बरसरे महफ़िल अजब हंगामा बरपा कर दिया
जाम लब से छीन कर ए साक़िया क्या कर दिया

तीर नज़रों के चलाते ही रहे वो बज़्म में
देखते-ही-देखते छलनी कलेजा कर दिया

सुनते हैं उलफ़त में दीवानों ने दे दी जान तक
हुस्न ने जब एक हलका-सा इशारा कर दिया

जब तसव्वुर में वो आए ज़ुल्फ़ सुलझाते हुए
ए 'मयंक' अपने अंधेरों में उजाला कर दिया

रुख़ तेरे तसव्वुर ने आज ऐसा फेरा है
जैसे दिल की दुनिया में हर तरफ़ अंधेरा है

इत्र में न बस जाएं क्यूं दिमाग़ो दिल मेरे
कूवे जुल्फ़े जानां में रंगो बू का डेरा है

मुझको मा सिवा तेरे फिकरे मा सिवा क्यूं हो
जब के याद ने तेरी आ के दिल को घेरा है

रास ऐसी आई है मुझ को अपनी तन्हाई
अब तो मेरा साया तक ख़ुद रकीब मेरा है

रौशनी 'मयंक' उसको मिल नहीं सकी अब तक
कोर जिसका बातिन हो हर तरफ़ अंधेरा है

जब किसी की याद मेरे दिल को तड़पाने लगी
सारी दुनिया मुज़तरिब मुझ को नज़र आने लगी

यूं हुए माईल वो मुझ से पुरासिशे एहवाल पर
हर तमन्ना मेरे दिल की जैसे बर आने लगी

फिर मुझे इज़हारे इश्क़ मुश्किल हो गया
फिर सरे महफ़िल किसी की आंख शरमाने लगी

आ न जाए पेश दिल के साथ कोई हादसा
क्या ख़बर क्यूं फिर मुसलसल उनकी याद आने लगी

यूं तसव्वुर में हुए वो ए 'मयंक' अपने करीब
ये हुआ महसूस जैसे हम को नींद आने लगी

जब मेरी नज़र उनसे मिलने को तरसती है
सावन की घटा जैसे आंखों से बरसती है

आसान नहीं दिल की दुनिया का बसा लेना
होता है जिगर का ख़ूं जब जाके ये बसती है

ईमान बदलता है ये देख के गुलचीं का
गुलशन में ज़रे गुल से जब आग बरसती है

औरों की ख़ुशी उस को होती है न ग़म अपना
वल्लाह अजब हस्ती दीवाने की हस्ती है

आए हैं 'मयंक' ऐसे लम्हे भी मोहब्बत में
जब मारे सिया बन कर तन्हाई भी डसती है

कश्ती तूफ़ां में गुम किनारा भी
छूट गया आख़री सहारा भी

ठोकरें खा के हमने देख लिया
गर्दिशे दहर तेरा धारा भी

जाते-जाते न मुड़ के देख सके
लाख मैं ने उन्हें पुकारा भी

सिर्फ़ वो आ के हाथ ही रख दें
दिल को इतना नहीं सहारा भी

मुझ को तेरे बग़ैर कब आए
गुलसितां का हसीं नज़ारा भी

ए 'मयंक' अब क़रारे उलफ़त में
बाज़ी जीता भी और हारा भी

फिर करो तिरछी नज़र का हम पे वार
जख़्मे दिल की है तमन्ना बार-बार

फिर गिराओ जानेमन बर्क़े नज़र
फिर ज़रा जलवा दिखा दो एक बार

जुल्फ़ सुबुंल है तो रुख़ गुलफ़ाम है
तुम चमन में रह के हो जाने बहार

ए मेरी जाने वफ़ा जाने ग़ज़ल
मेरे जानो दिल सभी तुझ पे निसार

रात दिन दिल में उन की आरज़ू
है 'मयंक' इस दिल में अपने जिन का प्यार

रोता है क्यूं रोने वाले
रोकर धीरज खोने वाले

आख़िर फल पाएगा इक दिन
बीज दया का बोने वाले

होंगी जहां में शोहरत तेरी
इश्क़ में रुसवा होने वाले

पाप का सागर है ये दुनिया
नाव भंवर में डुबोने वाले

धन्य 'मयंक' आंखों के आंसू
पाप का दामन धोने वाले

खुला हुआ ये शगुफ़्ता गुलाब रहने दो
गिराओ रुख़ पे न अपने नक़ाब रहने दो

तुम अपने रुख़ पे परेशां करो न जुल्फ़ों को
ये जगमगाता हुआ आफ़ताब रहने दो

नज़र झुका के यूं तुम मुझ से मुलताफ़ित क्यूं हो
नज़र उठाओ ये शरमो हिजाब रहने दो

मैं यूं भी खुश हूं किये जाओ मेरी नींद उच्चाट
तुम अपनी आंखों में मेरे ही ख्वाब रहने दो

करें वो याद तुम्हें ए 'मयंक' महफ़िल में
क़सम ख़ुदा की न देखो ये ख़्वाब रहने दो

खिजां का चमन में जो आना हुआ है
बहारों का खाली ख़ज़ाना हुआ है

उजड़ना था इक दिन मोहब्बत का गुलशन
खिजां का तो सिर्फ़ इक बहाना हुआ है

मिले थे वो इक दिन हमें राह चलते
इसी बात का तो फ़साना हुआ है

अभी तक मैं रिंदों में शामिल नहीं हूं
गो पीते हुए इक ज़माना हुआ है

निगाहे करम हो 'मयंक' पर भी इक दिन
इसे फ़ैज़ पाए ज़माना हुआ है

●●●

डायमण्ड पाकेट बुक्स में प्रकाशित रोचक व उपयोगी पुस्तकें

सामाजिक उपन्यास

गंशुल के उपन्यास

× पराया बेटा × अधिकार
× कोई शिकवा नहीं
× सपने तेरे मेरे × भीगी पलकें

रानी बाजपेयी के उपन्यास

दो बहुरानियां निर्दोष
दान दहेज गुलमेंहदी

प्रेम बाजपेयी के उपन्यास

—जले पंख

गुरुदत्त के उपन्यास

× स्वार्थी × ढकोसला

गुलशन नन्दा के उपन्यास

× नील कण्ठ
घाट का पत्थर जलती चट्टान

कुशवाहाकान्त

उसके साजन दानव देश
खून का प्यासा

राहुल

× शिकायत × अर्धांगिनी
कठपुतली × मुझे जीने दो
सच्चा झूठ × कांटो भरी राह
दो भाई त्याग
राखी के धागे बन्दिनी
छोटी मालकिन पतिव्रता

वेतना

× पिया का घर प्यारा लगे
× प्यासी घटा
× दामन का दाग
बड़े बाप की बेटी सरगम
परख परछाई
तृष्णा प्रियतमा
बेबस जिन्दगी
पूजा के फल अनुराग
दीवानगी

समीर

× औलाद का सुख
× भाभी का आंचल
× सात फेरों की कसम
× टूटने सपने
टूटा घरौंदा दामाद
धन-दौलत आराधना
औलाद आन
कसक बदनाम

लोकदर्शी

× कलयुग का देवता
× पिया मिलन दासी
प्रेम रोग कैदी
साजन की गलियां संजोग
—कोमल अबला
जीवन साथी देवी

अन्य उपन्यास

आरिफ

पहला पाप
इज्जत बाबूजी

विजयकुमार गुप्त

× संगम × बागी
परायामन उपकार

आबिद सुरती

कुंतल

आशापूर्णा देवी

श्रावणी

रंजना शर्मा

एक टूटी पगडंडी

रोमांचकारी

मनमोहन कुमार तमन्ना

× चम्बल के बागी

जासूसी उपन्यास

ओमप्रकाश शर्मा

+ रंगकोट का रेस्टहाऊस
□ अरब सागर के लुटेरे
+ जेल में षडयन्त्र
+ जगत बांग्ला देश में
+ होटल रंगशाला × पी कहां
+ माधवपुर हत्याकांड

वेदप्रकाश काम्बोज

+ शैतान संपोले
+ अत्याचार के अंधेरे
+ नाईन ड्रैगन
× षडयन्त्र की गन्ध

जेम्स हैडली चेईज के उपन्यास

+ मूर्ति का रहस्य
+ तूफान की एक रात
+ वेश्या की हत्या
+ खूनी बदला
+ ब्लैक मेलर की हत्या
× खूबसूरत बला + ग्रेट किलर

इंसपेक्टर गिरीश के उपन्यास

ड्रैगन
—मौत की घाटी
—कमरे में हत्या
—नाग की प्रेमिका
—स्वीमिंग पूल में लाश
—मैं अपराधी नहीं

फिल्मी गीतमाला सीरीज (सचित्र)

० हसरत जयपुरी के हिट फिल्मी गीत
० नीरज के हिटफिल्मी गीत
० शकील के "
० इन्दीवर के "
० राजेन्द्रकृष्ण के "
० भरतव्यास के "
० रफी के नग्मे
० लता के नग्मे
० किशोर के नग्मे
० मुकेश के नग्मे
० मुकेश के युगल गीत
० तलत व रुना लैला के नग्मे
० हेमन्त, मन्नाडे के नग्मे
० महेन्द्रकपूर के नग्मे
० आशाभोंसले के नग्मे

- नये फिल्मी नग्मे
- दर्द भरे फिल्मी नग्मे
- फिल्मी हास्य गीत
- फिल्मी गजलें
- फिल्मी कव्वालियां
- भूले बिसरे फिल्मी नग्मे
- फिल्मी राष्ट्रीय व भक्ति गीत
- बिनाका गीतमाला-१
- " " भाग-२
- " " भाग-३
- हिट फिल्मी नग्मे
- सदाबहार फिल्मी नग्मे
- चुलबुली रेखा
- ग्रेट शोमेन राजकपूर
- × अमिताभ बच्चन

सैक्स एजुकेशनल सीरीज

- सैक्स : विवाहितों के लिये
- सैक्स किशोर किशोरियों के लिए
- वात्सायन काममूत्र
- गर्भवती व शिशुपालन

शायरी सीरीज

- गालिब की शायरी
- शकील की शायरी
- दाग की शायरी
- जफर की शायरी
- चुनी हुई रुबाईयां

धार्मिक सीरीज

- श्रीमद् भगवद् गीता (हिन्दी अनुवाद सहित)
- संक्षिप्त रामायण
- महाभारत
- धार्मिक भजनावली

जोक्स सीरीज पाकेट (साईज)

प्रेमी-प्रेमीकाओं की नोंक-झोंक
पति-पत्नी के नोंक-जोंक
हुल्लड़ के जोक्स
काका के चुटकले
टाप जोक्स
माडर्न जोक्स
फिल्मी जोक्स
मिडनाईट जोक्स

मिनी साईज

- प्रेमी-प्रेमिकाओं के जोक्स
- पति-पत्नी के जोक्स
- चटपटे जोक्स
- चुने हुए जोक्स
- पार्टी जोक्स
- अकबर बीरबल
- बच्चों के जोक्स
- बड़े आदमियों के जोक्स

हास्य कविता सीरीज

काका हाथरसी

जय बोलो बेईमान की
काका काकी की नोंक-झोंक
काका के कारतूस
काका काकी के लव लेटर्स
- काका की फिल्मी पैरोड़िया —काका के चुटकले

हुल्लड़ मुरादाबादी

हुल्लड़ के कहकहे

हुल्लड़ के जोक्स

फक्कड़ मुरादाबादी

फक्कड़ का धमाका

हुड़दंग नगीनवी

हुड़दंग के हसगुल्ले

खेलकूद सीरीज

- जूडो कराटे कैसे सीखें
- क्रिकेट कैसे खेलें
- फुटबाल बालीबाल कैसे खेलें
- टेनिस टेबिल टेनिस, कैसे खेलें
- जिम्नास्टिक तथा शारीरिक व्यायाम कैसे करें
- कबड्डी और अन्य भारतीय खेल
- × जूडो केराटे बाक्सिंग कुंगफू कैसे सीखें

कुकरी सीरीज

- शाकाहारी भोजन पकाइये खाइये
- मांसाहारी भोजन
- अचार मुरब्बे चटनियां बनाइये खाइये

डायमण्ड पाकेट बुक्स

लेखक राजीव

- मामा भांजा और सरहद के बेटे
- लम्बू-मोटू और मौत से मुकाबला
- चाचा भतीजा और जादुई तिलस्म
- फैण्टम और विचित्र हत्यारे
- लम्बू-मोटू और खूनी पिशाच
- लम्बू-मोटू और पिशाच का आतंक
- लम्बू मोटू और प्रेत का हंगामा
- चाचा भतीजा और तिलस्मी गुफाए
- चाचा भतीजा और लंगड़ा जासूस
- चाचा चौधरी और खूनी दरिन्दे
- फौलादीसिंह और पृथ्वी के देवता
- फौलादीसिंह और जुपीटर की तबाही
- फैण्टम और रॉकी
- फैण्टम और जंगल का खजाना
- मौत से मुकाबला
- जहरीला खूनी
- आग के शोले
- राजस्थान की लोककथाएं
- महाराष्ट्र की लोककथाएं

- ताऊजी और जादूनगरी में हंगामा
- चाचा चौधरी और हवेली का खजाना
- फौलादीसिंह और ब्रह्माण्ड की राजकुमारी
- महाबली शाका और बीहड़ का बादशाह

डायमण्ड के चर्चित प्रकाशन

फिल्मी राष्ट्रीय गीत
फिल्मी भक्ति गीत
भूले बिसरे फिल्मी गीत
दर्द भरे फिल्मी गीत
साहिर के हिट फिल्मी गीत
रफी के दर्द भरे नग्मे
× रफी के नग्मे
× मुकेश के नग्मे
× लता के नग्मे
× किशोर के नग्मे

राधाकृष्ण श्रीमाली

× भारतीय ज्योतिष
+ वृहदहस्त रेखा
× ज्योतिष और रत्न
× ज्योतिष सीखिये
+ यंत्र शक्ति
× अंक ज्योतिष
+ तंत्र शक्ति
+ मंत्र शक्ति

योगाचार्य भगवान देव

× योग से रोग निवारण
× योग और स्वास्थ्य
× योग और सैक्स
× योग स्त्रियों के लिए
× योग पुरुषों के लिए
× भारत के अमर क्रांतिकारी
× स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायी

डा० सतीश गोयल

○ मैडिकल सैक्स गाइड
× वृहद वात्स्यायन कामसूत्र
× सैक्स और स्त्री पुरुष
× सैक्स और पति-पत्नी
× सैक्स शक्ति कैसे बढ़ाये

स्वेट मार्डन

× चिन्ता छोड़ो सुख से जियो

खेल कूद सीरीज

- आधुनिक मल्ल युद्ध (कुश्ती के १००० दांव पेच)
× जूडो कैराटे बाक्सिंग व कुंगफू
क्रिकेट सम्राट सुनील गावस्कर
युवा हृदय सम्राट कपिलदेव
क्रिकेट कैसे खेलें

धार्मिक सीरीज

+ श्रीमद भगवत गीता (संस्कृत हिन्दी टीका)
× शिरडी के सांई बाबा
सांई बाबा एक चमत्कारिक व्यक्तित्व

रजनीश योगी या भोगी

अमृतवाणी (सूक्तियां)

स्वास्थ्य

⊕ मोटापा घटाएं कद बढ़ाएं

□ लेडीज हैल्थ गाइड (मेकअप गाइड सहित)

+ बेबी हैल्थ गाइड

+ घरेलू इलाज

+ प्राकृतिक चिकित्सा

+ होम्योपैथिक गाईड

उर्दू शायरी सीरीज

× हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ गजलें

× हिन्दी रुबाइयां और मुक्तक

× उर्दू की बेहतरीन नज्में

× उर्दू की बेहतरीन गजलें

× उर्दू के बेहतरीन शेर

× उर्दू की बेहतरीन रुबाइयां

विविध

हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान)

पहेलियां ही पहेलियां

सिक्खों के दस गुरू

० गुरु नानक देव

० गुरु अंगद देव

० गुरु अमर दास

० गुरु राम दास

० गुरु अर्जुन देव

० गुरु हर गोविन्द

० गुरु हरि राय

० गुरु हरिकृष्ण

० गुरु तेगबहादुर

० गुरु गोविन्द सिंह

---

० चिह्न वाली पुस्तकों का मूल्य २ रुपया प्रति — चिह्न की पुस्तकों का मूल्य ३ रुपया प्रति बिना चिह्न वाली पुस्तकों का मूल्य ४ रुपया प्रति × चिह्न की पुस्तकों का मूल्य ५ रुपया प्रति + चिह्न की पुस्तकों का मूल्य ६ रुपया प्रति □ चिह्न की पुस्तकों का मूल्य ८ रुपया प्रति ○ चिह्न की पुस्तकों का मूल्य १० रुपया प्रति।

सम्पर्क सूत्र— **डायमण्ड पाकेट बुक्स**

२७१५, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

अंग्रेजी बोलचाल सिखाने वाली औरों से बिलकुल भिन्न प्रभावी पद्धति पर आधारित जो आपको कुछ प्रभावी शब्द और वाक्य नहीं रटाता बल्कि अंग्रेजी भाषा की गहरायी तक पहुंचकर आपको भाषा पर पूरा अधिकार करने की विशिष्ट क्षमता प्रदान करता है। अंग्रेजी भाषा के मर्म को गहराई से समझाने वाला एक ऐसा प्रभावी कोर्स जिसे अपनाकर आप महसूस करेंगे कि आपने वही पाया है जिसकी आपको वर्षों से तलाश थी।

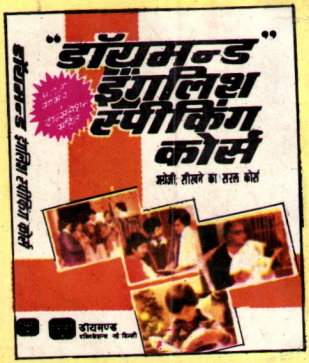

5.00
एडवांस
मनीआर्डर से भेजने
पर डाक व्यय
फ्री।

मूल्य : 21 रु.
5 रु. डाक-व्यय अलग

डायमंड पाकेट बुक्स

2715, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002